संपूर्ण विद्यालय विकास: समन्वयकारी नेतृत्व पूरे स्कूल पारिस्थितिकी तंत्र में

“स्कूल नेतृत्व का जश्न मनाने के लिए राष्ट्रीय सम्मेलन”

28 -30जनवरी 2024

नेशनल सेंटर फॉर स्कूल लीडरशिप
नेशनल इंस्टिट्यूट फॉर एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन 17 -बी ,अरविंदो मार्ग

नई दिल्ली -110016

स्कूल का नाम :- शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली

स्थान:- नरिया कोडोली

पूरा पता :-ग्राम पंचायत करमरी

कोडोली नारिया

संकुल केंद्र:- करमरी

विकासखंड:- नारायणपुर

जिला :-नारायणपुर

फोन नंबर:-7646863767,8817132932

ईमेल आईडी:-devendra.npr123.@gmail.com.

ईमेल आईडी:-kodoli823@gmail.com

स्कूल प्रोफाइल

स्कूल का नामः- शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली

पताः-नरिया कोडोली ग्राम पंचायत करमरी

स्कूल का यू डाइस कोडः- 2218 37 18402

विद्यालय स्थापना वर्षः- 2006

संकुलः-करमरी

पंचायतः-करमरी

विकासखंडः- नारायणपुर

जिलाः- नारायणपुर

विधानसभा क्षेत्र 84 ,संसदीय क्षेत्र

प्रधान अध्यापक का नामः- देवेंद्र कुमार देवांगन

जिला शिक्षा अधिकारीः- श्री राजेंद्र प्रसाद झा

डायट प्राचार्यः- श्री जी .आर.मंडावी

व्याख्याता:- श्री गिरीश भास्कर

विकासखंड शिक्षा अधिकारी:-श्री कृष्ण कुमार गोटा

संकुल समन्वयक:-श्री प्रेम प्रकाश देवांगन

स्कूल का ईमेल:-devendra.npr123@gmail.com

विद्यालय का बैंक खाता नंबर:-87270100008045

कुल छात्र संख्या:-21

शिक्षक संख्या:-01

कक्षा:-1 से 5

बुनियादी ढांचा : - 17 अगस्त 2006 को प्रातः 8:00 बजे नए स्कूल के लिए बहुत ही उत्साह के साथ साइकिल में सवार होकर एक शिक्षक के घर पहुंचा तब मुझे पता चला कि ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली, नारायणपुर से लगभग 22 किलोमीटर की दूरी पर है। फिर मैं

शिक्षक के साथ मिलकर आगे का सफर तय किया और जब ग्राम बोरण्ड में सचिव महोदय के निवास स्थान में पहुंचे और उन्हें हमारे साथ चलने के लिए मैंने निवेदन किया ।जब हम उनके निवास स्थान से निकले और कुछ ही दूरी चले थे कि हमें साइकिल को रखना पड़ा और वहां से पैदल ही चलना पड़ा। पैदल चलते हुए लगभग 2 घंटे का समय ग्राम नारिया कोडोली पहुंचने में लग गया क्योंकि सड़क मार्ग नहीं होने के कारण हमें कच्चे रास्ता, जो काली मिट्टी से होकर गुजरता था , जाना पड़ा और रास्ते में ही मेरा चप्पल वहीं पर टूट गया। नंगे पैर तीनों आगे बढ़ते गए जब ग्राम नरिया कोडोली पहुंचे, खेतों के बीच चलने के कारण, कीचड़ से लतपथ, हमारे कपड़े पूरी तरह से खराब हो चुका थे। गांव में पहुंचने के बाद गांव में कोई भी व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था। फिर सचिव महोदय ने उनके घर में जाकर कुछ वरिष्ठ नागरिकों को बुलाकर ले आये।गांव के ग्राम पटेल और उनके साथ चार वरिष्ठ नागरिक इमली के पेड़ के नीचे जहां पर घोटुल युवा गृह था

उसी के सामने सभी लकड़ी में बैठकर मेरे आवेदन में सभी ने अंगूठे का निशान लगाया और सचिव महोदय ने भी अपनी सील और हस्ताक्षर किए।   मैं एक नई स्कूल में जा रहा हूं यह सोचकर काफी उत्साहित था, लेकिन जब ग्राम में पहुंचा तो देखा कि गांव में किसी भी प्रकार का कोई सामुदायिक भवन नहीं था और जो घोटुल था वह भी बहुत ही जर्जर स्थिति में था। क्योंकि जानवर रात को आकर वहां पर मल मूत्र त्याग कर देते थे ।जिसके कारण मुझे बच्चों को अध्ययन करने में काफी परेशानी होता था । इसलिए मैं गांव वालों से विचार विमर्श कर इमली के पेड़ के नीचे ही सहारा लेकर अध्ययन कराना प्रारंभ किया। प्रथम वर्ष मात्र 10 बच्चे का नाम दर्ज कर पाया।

गांव में कोई भी व्यक्ति पढ़ा लिखा नहीं था जिसके कारण शिक्षा क्या है? , इसकी समझ ग्राम वासियों को नहीं था। इसी कारण वह अपने बच्चों को कृषि कार्य एवं जंगलों से प्राप्त वन संपदा को एकत्रित करने के लिए, बच्चों को अपने साथ हमेशा ले जाया करते थे। जिसके कारण विद्यालय की उपस्थिति मात्र तीन-चार बच्चों का ही रहता था। कई बार उन्हें बोला गया लेकिन पालक गण ध्यान नहीं देते थे । जो बच्चे पालक के साथ नहीं जाते थे, वे अपने घर में रहकर अपने छोटे भाई बहनों की देखभाल किया करते थे।

अति संवेदनशील नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण गांव में किसी भी प्रकार का कोई बैठक या समूह में बात करना , पूरी तरह से मना ही था। इस कारण मुझे उनके घर-घर जाकर बच्चों को भेजने के लिए बार-बार बोलना पड़ता था ।बच्चों के पास कापी कलम भी नहीं था और माता पिता भी बहुत ही गरीब थे ।अपने से वे लोग नहीं खरीद पाते थे। इस कारण मुझे ही अपने स्वयं के पैसे से कापी, पेन, स्लेट ,पेंसिल ले जाकर उन्हें दिया जाता था। जिससे की बच्चे काफी पेन से लिखना पढ़ना सीखते थे। सबसे बड़ी समस्या यह था कि बच्चों की शाला में उपस्थिती । भले भवन नहीं था, कोई बात नहीं लेकिन उपस्थिती होता तो मुझे भी अच्छा लगता, लेकिन अति संवेदनशील

नक्सलाइट क्षेत्र होने के कारण , पालकों को भी मैं बार-बार दबाव बना नहीं सकता था। क्योंकि मेरी छोटी सी चूक , थोड़ी सी गलती और मौत का सामना करना पड़ सकता था ।

बरसात के दिनों में छोटी सी कुटिया बनाकर पॉलिथीन का सहारा लेकर बच्चों को अध्ययन कराने का प्रयास मेरे द्वारा किया जाता था। यह बहुत ही दुखदाई था क्योंकि जमीन नीचे गिला रहता था। और बच्चे उसी गिला जमीन में अधिक समय तक नहीं बैठ पाते थे यह मेरे लिए और उन बच्चों के लिए बहुत ही ज्यादा कष्टप्रद लगता था। नए भवन के लिये ग्राम पंचायत स्तर, ब्लॉक स्तर एवं जिला स्तर पर कई बार आवेदन दिया गया था। 2008 में नए भवन की स्वीकृत भी हो चुका था लेकिन अति संवेदनशील नक्सलाइट क्षेत्र होने के कारण जन भागीदारी विकास समिति द्वारा ,भवन बनाने हेतु मना कर दिया गया। इसीलिए मुझे 2006 से 2012 तक इमली के पेड़ के नीचे ही बच्चों को अध्ययन कराना मेरे और मेरे गांव वालों की मजबूरी रहा। 2012-13 में शासन की ओर से एक छोटा सा किचन सेट का निर्माण किया गया,

इस किचन शेड में एक तरफ भोजन बनाया जाता था और दूसरी छोर में मुझे बच्चों को अध्ययन कराना पड़ता था ऐसे में कैसे अध्ययन कराऊं यह मेरे लिए भी बहुत ही सोचनीय विषय था। धुएं से बच्चों का आंख लाल हो जाता था और उनकी आंखों से आसूं टपकना प्रारंभ हो जाता था ।ऐसी विषम परिस्थितियों के बावजूद भी मैंने हिम्मत नहीं हारा और लगातार प्रयास करता रहा कि कभी ना कभी , एक न एक दिन मुझे इस कार्य में सफलता जरूर प्राप्त होगा। 3 वर्षों तक मैंने किचन शेड में ही बच्चों को अध्ययन कराया । फिर धीरे-धीरे पालकों ने भी साथ देना प्रारंभ किया। क्योंकि पांचवी उत्तीर्ण बच्चों को मैंने जिला मुख्यालय की छात्रावास में प्रवेश कराना प्रारंभ किया ।जिससे शिक्षा के प्रति पालकों में भी रुझान प्रारंभ हुआ। जब छात्रवासी बच्चे गांव आते थे तो उन्हें देखकर सभी पालक काफी प्रसन्नचित रहते थे। फिर पालकों एवं मेरे प्रयासों से जिला एवं ब्लॉक में आवेदन देना प्रारंभ किए । जिससे शासन की ओर से ग्राम पंचायत के द्वारा दो कमरे का भवन बनाकर अधूरा छोड़ दिया गया क्योंकि भवन निर्माण सामग्री पहुंचने में काफी दिक्कत का सामना करना पड़ता था ।

रास्ता में पुल पुलिया नहीं होने की वजह से यह भवन बनने में लगभग 2 वर्ष का समय लग गया और जब भवन बन गया तो वह भी एक कमरा पूर्ण रूप से अंधकारमय था ।उस कमरा में एक भी

खिड़की नहीं था और एक ही कमरा में कक्षा पहली से पांचवी तक के बच्चों को अध्ययन कराना, बहुत ही मुश्किल था। जब भवन बन गया तो पालकों से मिलकर बैठक का आयोजन किया I बैठक में यह निर्णय लिया गया कि सभी पालक अपने बच्चों को विद्यालय सुचारू रूप से भेजेंगे। लेकिन ऐसा नहीं हुआ क्योंकि बच्चे विद्यालय आते थे तो उन्हें आधुनिक सुख सुविधा प्राप्त नहीं होता था जिसके कारण बच्चों को आकर्षित करने के लिए मेरे द्वारा कुछ नवाचार किये गये। उन नवाचारों से , बच्चे खेल-खेल के माध्यम से सीखने लगे। बच्चों का प्रिय चीज खेल होता है। और जब धान कुटनी जोड़ मशीन, चकरी खेल ,अबूझमाड़ वीडियो ऐसे कई नवाचार मेरे द्वारा किया गया

जिसे देखकर बच्चे समय से पूर्व विद्यालय जाकर खेल-खेल में, स्वयं से हिंदी ,गणित, अंग्रेजी आदि विषयों को सीखना प्रारंभ किये। और बच्चों को शिक्षा के प्रति जोड़े रहने के लिए माह में एक बार पालकों का बैठक आयोजन कर उन्हें उनकी स्थानीय बोली गोंडी में समझाकर , बच्चों को स्कूल भेजने के लिए भी बोला जाता था। पालकों के साथ मिलकर शाला विकास योजना तैयार किया

गया। अरविंदो सोसाइटी के माध्यम से 2017 में शून्य निवेश नवाचार प्रदर्शनी का आयोजन किया

गया।

उस प्रदर्शनी में मेरे द्वारा बनाए हुए नवाचार को बच्चों के साथ, जिला मुख्यालय नारायणपुर में लाया गया। अन्य स्कूलों के बच्चों को देखकर , उनमें समझ आने लगा कि पढ़ाई क्यो जरूरी है और पढ़ाई कैसे करना है। मेरे द्वारा बनाए हुए नवाचार ने , जिला में प्रथम स्थान प्राप्त किया। 2018 में जिला स्तरीय पुस्तक वाचन प्रतियोगिता में आशीष कुमार वड्डे ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

18 नवंबर 2021 को ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में अभिभावक मित्र का गठन किया गया। इस गठन के फल स्वरुप विद्यालय दिनोंदिन विकास की राह में आगे बढ़ने लगा क्योंकि पूरे समुदाय का विद्यालय में निरंतर सहयोग प्राप्त होता गया

और साथ ही जिला के मेरे मित्रों युवा व्यापारियों द्वारा पुरस्कार योजना मासिक एवं सप्ताहिक पुरस्कार योजना मेरे और अभिभावक मित्रों के मदद से यह योजना संचालित किया जा रहा है।जिसके कारण विद्यालय में 100% उपस्थित देखने को मिल रहा है। अभिभावक मित्र गठन करने वाला जिला एवं राज्य का पहला विद्यालय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली है।

नवभारत छत्तीसगढ़ • ओडिशा

Jagdalpur - 13 Nov 2022 - 13jdp3

अभिषेक बेनर्जी (ब्यूरोप्रमुख)

युवा व्यापारियों ने बच्चों को बांटे गर्म कपड़े

ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के बच्चों को दी राहत

नवभारत रिपोर्टर। नारायणपुर।

ग्राम कोडोली स्थित ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला के स्कूली बच्चों को अभिभावक व शिक्षा मित्रों के आग्रह पर युवा व्यापारियों के द्वारा एक ही बार में सहमति प्रदान कर, आज शनिवार को यहां पहुंचकर सभी बच्चों को जींस और स्वेटर स्वयं अपने हाथों से प्रदान किए गये। ज्ञात हो कि जिले के सुदूर अंचल करमरी ग्राम पंचायत के आश्रित ग्राम कोडोली स्थित ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला नरिया के बच्चों को शीतकालीन में काफी ज्यादा ठंड का सामना करना पड़ता है, क्योंकि यह गांव चारों ओर से जंगल के बीच बसा है, और यहां ठंड भी काफी अधिक लगती है, जिसे देखते हुए उन्हें गर्म कपड़े वितरित किये गये। स्कूल के प्रधानाध्यापक देवेंद्र देवांगन और अतिथि शिक्षक मनोज कुमार यादव के द्वारा नारायणपुर जिला से आए हुए, युवा व्यापारियों का आभार व्यक्त किया गया तथा बच्चों के चेहरे पर काफी प्रसन्नता दिखाई दिया, अभिभावक मित्र अध्यक्ष चमरु राम और बच्चों ने भी सभी युवा व्यापारियों को बहुत-बहुत धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

-------------------------**********--------------------------

वर्तमान परिदृश्य:- स्कूल की प्रमुख ताकतें और कमजोरी

स्कूल की मुख्य ताकत :-ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित अबूझमाड़ की पहाड़ियों से घिरा हुआ एक छोटा सा गांव है । यह क्षेत्र काफी पिछड़ा हुआ है। अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण हमेशा नक्सलियों का भय बना हुआ रहता है , जिसके कारण इस गांव का विकास नहीं हो पाया। गांव में किसी प्रकार की कोई सामुदायिक भवन नहीं होने के कारण मुझे 6 वर्षों तक इमली के पेड़ के नीचे बच्चों को अध्ययन कराना पड़ा ।इन वर्षों में मेरी मुख्य ताकत गांव की तीन वरिष्ठ नागरिकों का हमेशा मिलने वाला सहयोग था , क्योंकि जब विद्यालय में बच्चे नहीं आते थे तो मैं अकेले ही पेड़ के नीचे बैठा रहता था ।

उस समय गांव के तीनों वरिष्ठ नागरिक आकर मुझे बहुत समझाते और प्रोत्साहित करते थे। आज बच्चे नहीं आए तो कोई बात नहीं, आज शाम को हम तीनों सभी बच्चों के घर में जाकर उन्हें स्कूल आने के लिए प्रेरित करेंगे। हम नहीं पढ़ पाए तो क्या हुआ हमारे गांव के बच्चों विद्यालय आकर पढ़े, ऐसा उनका विचार था, और उनके सहयोग से ही बच्चे दूसरे दिन विद्यालय आते थे ।क्योंकि मुझे स्थानीय बोली गोंडी नहीं आने के कारण मेरी बातों को पालक नहीं समझ पाते थे ।मात्र यह 3 वरिष्ठ नागरिक ही मेरे बातों को समझते थे और बच्चों को विद्यालय आने के लिए हमेशा प्रेरित करते थे ।आज दो वरिष्ठ नागरिक इस दुनिया में नहीं है लेकिन इनका सहयोग उनके आशीर्वाद स्वरुप मुझे निरंतर प्राप्त हो रहा है । स्वर्गीय श्री सनवाराम सलाम के द्वारा जमींन दान किया गया जिसमें आज नए विद्यालय भवन का निर्माण किया गया है।

ये वरिष्ठ नागरिक उस समय मुझे सहयोग नहीं करते तो, शायद आज वर्तमान स्थिति में विद्यालय बनना नामुमकिन था। क्योंकि उनके मार्गदर्शन से ही गांव का स्वरूप धीरे-धीरे बदलता गया । 2 वरिष्ठ नागरिकों का निधन हो चुका है । एक श्री गुफा राम जी का सहयोग आज भी मुझे प्राप्त हो रहा है और विद्यालय का स्वरूप देखकर वे काफी प्रसन्न हैं तथा सप्ताह में एक बार विद्यालय आकर बच्चों की स्थिति के बारे में हमेशा मुझसे चर्चा करते रहते हैं ।और जो बच्चे विद्यालय नहीं आते उनके घर तक स्वयं जाते हैं ।

ठीक उसी प्रकार एक वरिष्ठ नागरिक स्वर्गीय श्री लखूराम जी की धर्मपत्नी जो गांव की दादी मां के नाम से प्रसिद्ध है , वह भी अपनी नाती पोती को विद्यालय लाने के साथ-साथ गांव की अन्य बच्चों को विद्यालय लाने में सहयोग करते हैं ।जो बच्चे विद्यालय नहीं आते हैं उनके घर तक वह स्वयं ही जाकर उन्हें उन्हें प्रेरित कर विद्यालय तक लाते हैं। उन्हें गांव की दादी मां के नाम से जाना

जाता है। गांव की वरिष्ठ ही मेरे प्रमुख ताकतों में से हैं । 2014 में एक घटना मेरे साथ घटित हुआ। जब मैं कक्षा पांचवी के बच्चों को बुलाने के लिए एक बड़े बच्चे को बुलाया , लेकिन एक छोटे सैं बालक कक्षा पहली में पढ़ने वाला रजऊ वड्डे स्वयं से मेरे पास आकर बोला कि सर मैं बुलाने जाऊंगा और वह दौड़ते हुए विद्यालय से निकल गया ।

1 घंटे तक बच्चा वापस नहीं आया तो मुझे उसे देखने के लिए जाना पड़ा कि आखिर बच्चा वापस क्यों नहीं आ रहा है ।जब मैं वहां तक पहुंचा तो देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि कक्षा पांचवी में पढ़ने वाले बच्चा के पालक को वह बच्चा, अपने स्थानीय भाषा में बोला कि जब तक आपका बच्चा स्कूल नहीं आता है , तब तक मैं आपके घर में ही , यहीं पर बैठा रहूंगा । मजबूरी वश उस बच्चा के पालक को, अपने बच्चे को विद्यालय तक छोड़ने आना पड़ा । उसे बच्चे को गांव में मुंज कहते थे।जिसका अर्थ होता है वानर । उसी दिन से मेरे दिमाग में यह शब्द दौड़ने लगा और मेरे द्वारा दूसरे ही दिन वानर सेना का गठन किया गया । इस वानर सेना का कार्य रहता था कि जो बच्चा विद्यालय नहीं आता है उसके घर जा के उस बच्चे को विद्यालय लाना। जो बच्चे समय से पहले आ जाते है , वह दूसरे बच्चों को बुलाने के लिए अपने बस्ता को रखकर चले जाते हैं। वानर सेना के कारण उपस्थिति दर में भी काफी वृद्धि हुआ।

कमजोरियां

ग्राम कोडोली अति संवेदनशील नक्सलवादियों का क्षेत्र होने के कारण यहां पर किसी भी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं था। ना ही विद्यालय भवन था और ना सामुदायिक भवन था। ऐसी विषम परिस्थिति में बच्चों को अध्ययन कराना बहुत ही चुनौती पूर्ण था क्योंकि 8 वर्षों तक संकुल समन्वय या अन्य अधिकारी भी ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली का निरीक्षण करने नहीं आये थे। किसी भी प्रकार से कोई मार्गदर्शन मुझे प्राप्त नहीं होता था। ऐसे में क्या करूं यह मेरे लिए बहुत ही चुनौती विषय था। क्योंकि गांव में कोई भी व्यक्ति पढ़ा लिखा नहीं होने के कारण मेरे लिए दिनों दिन परेशानियां बढ़ता गया। गांव की स्थानीय बोली गोंडी का ज्ञान नहीं था। यह मेरा सबसे बड़ी कमजोरी था , क्योंकि बच्चे विद्यालय आते थे तो अपने स्थानीय बोली में ही अपनी समस्या बताते थे

।

लेकिन मैं भी हिम्मत नहीं हारा और उन बच्चों को हिंदी बोलने के लिए प्रेरित करता गया। धीरे-धीरे स्कूल में पढ़ने वाले बच्चे टूटे-फूटे हिंदी बोलना प्रारंभ किए। जिससे मुझमें आत्मविश्वास बढ़ता गया और गांव में बैठक रखकर सभी पालकों को सहयोग के लिए अपील किया । उनको बोला कि आप सभी जब भी मुझसे बात करते हैं तो हिंदी में ही बात कीजिए ताकि आपके बच्चे भी हिंदी में बात कर सके। क्योंकि मेरी बातों को पालक समझ तो लेते थे लेकिन जवाब दे नहीं पाते थे। जिसके कारण यह ग्राम, मेरे लिए एक जटिल समस्या था मैंने भी स्थानीय बोली गोंडी सीखने का प्रयास करने लगा फिर थोड़े-थोड़े उनकी बातों को समझने लगा।

खतरा विश्लेषण

ग्राम कोडोली अबूझमाड़ की पहाड़ियों से घिरा हुआ और चारों ओर जंगलों के बीच बस एक छोटा सा गांव है ।यहां पर बरसात के दिनों में आवागमन के साधन उपलब्ध नहीं होने के कारण बहुत ही

परेशानियों का सामना करना पड़ता था क्योंकि नदी नालों में फूल पुलिया नहीं था ।

जिसके कारण आते जाते वक्त हमेशा मन में एक प्रकार का भय बना हुआ रहता था और जंगली क्षेत्र होने के कारण रास्ते में कई प्रकार के जंगली जानवर भालू, जंगली सुअर, सर्प, बिच्छू आदि रास्ते में दिखाई देते थे । गांव में भी अधिकतर सर्प दिखाई देते थे क्योंकि जंगली क्षेत्र होने के कारण यहां का वातावरण जंगली जानवरों के लिए बहुत ही अनुकूल है । स्कूल के समय बच्चे जब शौचालय जाते थे तो हमेशा मन में वह डर बना रहता था कि कुछ दुर्घटना ना घट जाय । इसके लिए मुझे हमेशा सतर्क रहकर ही कार्य करना पढ़ता था । कई बार मैं भी नदी में गिर चुका हूं और एक बार तो मौत का सामना भी हो चुका है , फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारा ।कई बार स्कूल विद्यालय परिसर और स्कूल की छत पर सांप आकर झूलते रहते थे । वह भी बहुत अति विषैला सांपों का सामना आए दिन करना पड़ता था। जब आंधी तूफान आता था तो किचन शेड हिलने लगते थे जिसके कारण हमेशा मन में भय बना हुआ रहता था। उसके बाद जब विद्यालय बना तो विद्यालय के ऊपर टीना शेड दिया हुआ था।

वह सीट भी आंधी तूफान से एक बार तो छत को उड़ा ले गया था , उस दिन अवकाश था तो किसी बच्चे का कोई नुकसान नहीं हुआ। शाला भवन भी कई जगह से दीवाल फटा हुआ था। जिसके कारण बरसात के दिनों में हमेशा डर बना हुआ रहता था कि कब भवन गिर न जाएं ।शासन की ओर से बालक बालिका शौचालय बना दिया गया। वह भी मात्र दो वर्ष में पूर्णतः धराशाही हो गया।

अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण नक्सली समस्या हमेशा बना हुआ रहता था कि कब क्या हो जाए , इसकी कोई उम्मीद नहीं था । इन विषम परिस्थितियों के बावजूद भी मैंने अपने कार्य को और बच्चों को अच्छे से अच्छा शिक्षा शिक्षा दे सकूं इसके लिए सतत प्रयास करता रहा।

वर्तमान परिदृश्य

शिक्षा वह जादुई दिया है जो अज्ञान के अंधेरे को काटता है और स्वतंत्रता के स्वर्णद्वार खोलता है। स्वामी विवेकानन्द जी के अनुसार जिस संयम के द्वारा इच्छाशक्ति का प्रवाह और विकास वश में लाया जाता है और वह फलदायक होता है, वह शिक्षा कहलाती है। साथ ही में उनका यह भी मत था कि अन्तर्निहित पूर्णता का उद्घाटन ही शिक्षा है। जब पूर्णता की अभिव्यक्ति का स्तर शनैः शनैः उच्चता की ओर बढ़ता है ।

17 अगस्त 2006 को कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात भवन विहीन विद्यालय में अध्ययन कराना बहुत ही मुश्किल था ।क्योंकि भवन नहीं होने के कारण मुझे ईमली के पेड़ के नीचे बच्चों को नियमित अध्ययन कराना पड़ता था। बरसात के दिनों में काफी अधिक परेशानियों का सामना करना पड़ता था। क्योंकि गांव में सामुदायिक भवन नहीं था। भवन नहीं होने की वजह से इमली के पेड़ का सहारा लेकर मैंने 6 वर्षों तक बच्चों को नियमित अध्ययन कराया। 2014 में ग्राम पंचायत के

सहयोग से दो रूम का विद्यालय भवन बना कर दिया गया। जिसमें एक रूम पूर्णता अंधेरा रहता है। एक ही रूम में सभी बच्चों को अध्ययन कराना , किसी चुनौती से कम नहीं था।

मैं 14 वर्षों से एकल शिक्षक के रूप में कार्य कर रहा हूं। एक कमरा, एक शिक्षक और 5 कक्षाएं , यह मेरे लिए बहुत बड़ा चुनौती का काम था। ऐसे में बच्चों को नियमित विद्यालय आने के लिए प्रेरित करना, जिससे उनका नियमित अध्ययन हो, सके ।

लेकिन ग्रामीण क्षेत्र होने की वजह से मौसमी फलों एवं वनों से प्राप्त फलों को एकत्रित करने के लिए पालक गण अपने बच्चों को अपने साथ ले जाते थे। जिससे बच्चे विद्यालय नहीं आते थे,लेकिन 2014 में वानर सेना का गठन किया गया। इस वानर सेना का कार्य था,बच्चों को घर जाकर विद्यालय जब तक बच्चे को लेकर नहीं आते तब तक बालक घर में ही बैठे रहते हैं ।मजबूरी वंश

उसके पालक माता-पिता को विद्यालय तक बच्चे को लेकर आना पड़ता है।

वानर सेना की वजह से दिनोंदिन विद्यालय की उपस्थिति में वृद्धि हुआ। जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर दूर स्थित होने के कारण यहां पर किसी भी प्रकार की आधुनिक सुविधाएं इलेक्ट्रॉनिक संसाधन उपलब्ध नहीं था। ऐसे में मेरे द्वारा नवाचार किया गया। धान कूटनी जोड़ मशीन, पहाड़ा मशीन, अबूझमाड़ वीडियो ,30 अंकलाव चॉकलेट खाओ, गुठली का खेल , ऐसे 25नवाचार किया जो बच्चों के लिए वरदान साबित हुआ ।

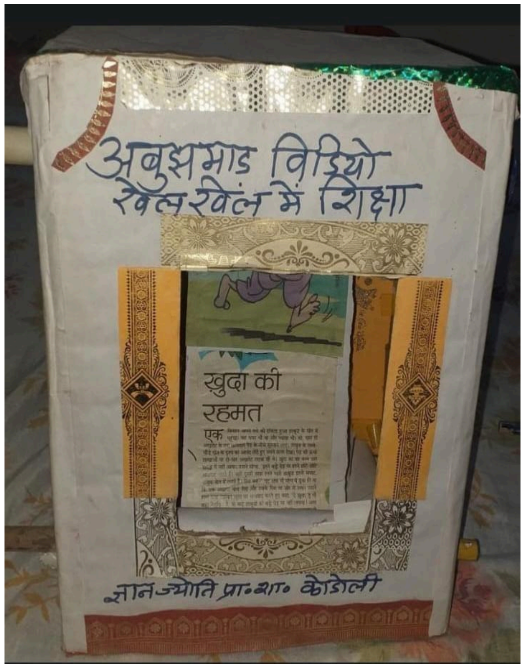

बच्चे समय से पूर्व विद्यालय आकर स्वयं से नवाचार के माध्यम से खेल खेल में अध्ययन कर सीख रहे हैं ।मेरे द्वारा नवाचार , बच्चों और मेरे लिए वरदान साबित हुआ क्योंकि एकल शिक्षक विद्यालय में सभी बच्चों को एक साथ पढ़ाना होता है

,

ऐसे में मेरे लिए बहुत ही सरल, नवाचार के माध्यम से हो गया । 2018 में आधुनिकता के इस दौड़ में गांव के सीधे साधे युवक युवतीयां सम्मिलित होते नजर आ रहे हैं ।ऐसे समय में मेरे द्वारा गांव की युवक युवतीयों को एकता के सूत्र में बांधे हुए एक विवेकानंद स्व सहायता समूह का गठन किया गया।

ग्रामीण युवाओं को रोजगार दिलाने का शिक्षक का सपना साकार

» स्वसहायता समूह के माध्यम से युवा रोजगार पाने में सक्षम

नारायणपुर, 22 जनवरी। नारायणपुर जिला मुख्यालय से 22 जिला किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत करमरी के एक छोटे से ग्राम नरिया कोडोली जो आजकल शिक्षा के क्षेत्र में काफी चर्चा में चल रहा है इस क्षेत्र में रोजगार का कोई साधन नहीं होने से युवा पूरी तरह से हतोत्साहित थे और अन्य राज्यों की ओर पलायन कर रहे थे जो काफी दुखद ग्राम वासियों के लिए था शिक्षक भी बहुत चिंतित था इस कारण उन्होंने युवाओं को संगठित कर स्व सहायता समूह का गठन किया गया युवा स्व सहायता समूह में 23 सदस्य हैं युवा स्व सहायता समूह के अध्यक्ष मनकुर गोटा और रामूराम सलाम उपाध्यक्ष एवं सदस्यों के द्वारा पहली बार नरिया कोडोली में युवाओं का स्व सहायता समूह का गठन किया गया इस समूह के द्वारा आज मंगलवार करमरी बाजार में पहली बार होटल लगाया गया इस होटल में भजिया जलेबी समोसा मीठा भजिया नड्डा आदि स्व सहायता समूह के द्वारा आज मंगलवार करमरी बाजार में स्वयं द्वारा सामान बनाकर बिक्री और साथ में युवाओं के द्वारा चिकन मार्केट भी खोला गया पहली बार दूरस्थ अंचल की युवाओं के द्वारा अपना दुकान पाकर बहुत ही उत्साहित हैं स्पष्ट रूप से उनके चेहरों से उत्साह नजर आ रहा है आज पूरे ग्रामवासी और युवा काफी खुश हैं क्योंकि इससे पूर्व दूसरे ग्राम से बाजार में होटल और चिकन मार्केट लगाते हुए देखे थे आज स्वयं का दुकान पाकर सभी युवाओं और किशोरियों जोश एवं उत्साह उनके चेहरे पर देखा जा सकता है शिक्षक देवेंद्र देवाँगन के सराहनीय पहल से ग्रामवासी एवं पंचायत के सभी ग्रामों में चर्चा की सुर्खियों में चल रहा है इस सराहनीय पहल के लिए शिक्षक को युवा स्व सहायता समूह एवं समस्त ग्रामवासी की ओर से शिक्षक को बहुत-बहुत धन्यवाद दिए।

इस गठन के पश्चात गांव की युवा युक्तियां बेरोजगारों से ₹500 जमा करके स्थानी हाट बाजारों में उनके लिए रोजगार के साधन होटल तथा वन उपज खरीदी करने का कार्य प्रारंभ किया गया तथा विवेकानंद स्व सहायता समूह द्वारा आधुनिकता की इस दौड़ से उन्हें उठाकर अपनी संस्कृति से जोड़ने का प्रयास किया गया।

विवेकानंद नृतक दल का गठन किया गया। नृतक दल के गठन करने के पश्चात सर्वप्रथम नारायणपुर नगर पालिका में अरविंदो सोसाइटी के कार्यक्रम में नृतक दल के द्वारा प्रस्तुति दिया गया।कोविड-19 के दौरान जब संपूर्ण देश कोरोना से प्रभावित था लॉकडाउन लगा था, ऐसे में ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के बच्चों को मोहल्ला क्लास के माध्यम से लगातार अध्ययन कराया जा रहा था। मोटरसाइकिल गुरुजी के नाम से मैंने 4 ग्राम पंचायतों के 13 स्थानों पर

मोहल्ला क्लास चलाया, लाउडस्पीकर के माध्यम से लगभग 300 बच्चों को लॉकडाउन के दौरान अध्ययन से जोड़े रखा। मोहल्ला क्लास ग्राम के शिक्षित बेरोजगार युवक-युवतियों के सहयोग से लगातार संचालित करता रहा।

मोटरसाइकिल गुरुजी के रूप में मैंने संकुल ,विकासखंड, जिला एवं राज्य स्तर पर अपना अलग पहचान बना लिया ।आज मोटरसाइकिल गुरु जी के रूप में छत्तीसगढ़ के साथ-साथ अन्य राज्यों के शिक्षकों से मेरा निरंतर संपर्क बना हुआ है। लगातार 18 वर्ष से ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली का किसी भी प्रकार की कोई शिकायत आज तक नहीं हुआ है।

Teacher Dewangan turning adversity into opportunity for rural students

- Dewangan conducts offline classes and teaches children through loudspeaker under 'Padhai Tuhar Dwar' project

Our Correspondent
NARAYANPUR, July 19,

IT is rightly said that the influence of a good teacher can never be erased. This has been proved by a teacher in Narayanpur who is teaching the students, who do not have android phones, with loudspeakers. The teacher conducts offline classes and teaches the children through loudspeaker under 'Padhai Tuhar Dwar' project.

Today the whole country is amidst a tough battle with Coronavirus and many lives have also been affected with the same. The thing which been affected the most is education as all the schools and colleges have been closed over last two months as a measure of COVID-19 prevention.

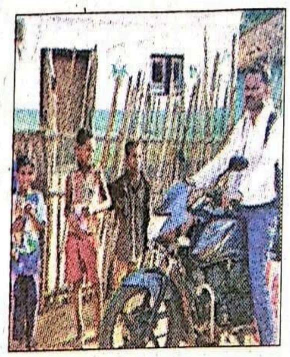

Teacher Devendra Kumar Dewangan.

However, Chhattisgarh state government's 'Padhai Tuhar Dwar' is a bit relief for this problem. It needs a mention here that under 'Padhai Tuhar Dwar', online classes are being conducted by the teachers so that the students can learn even while sitting at their homes.

But many children in rural and remote areas of the state are still deprived of this benefit as either they don't have mobile phones or proper network connection.

On such remote village Kadoli is in Narayanpur district where the students are not able to get the benefits of online classes. However, coming as saviour, a teacher Devendra Kumar Dewangan of Gyan Jyoti Primary School, Kodoli here has started teaching children through loudspeakers.

Devendra Kumar Dewangan takes his loudspeaker classes in Indira Awaspara and Bus stand para and teaches a batch of 30 students. The students are taught through loudspeakers and proper social distancing is maintained in the classes.

Apart from this, Devendra has chosen four volunteers from every village to help him in this noble deed. Devendra sends audio of lessons to the four volunteers in Hindi and local Halbi language and these volunteers play these audios for the children.

Apart from this, the youth also checks the homework of the children, who cannot attend the classes and also provides them necessary guidance.

क्योंकि मेरे कार्यों से संकुल समन्वयक, पालकगण एवं जिला के सभी अधिकारी प्रसन्न है।और मेरे कार्यों के कारण मुझे मुख्यमंत्री गौरव शिक्षा अलंकरण प्राप्त हुआ है तथा जिला कलेक्टर महोदय द्वारा प्रमाण पत्र दिया गया है। अरविंदो सोसायटी द्वारा अन्य राज्यों एवं जिला से प्रशंसनीय प्रमाण पत्र लगातार प्राप्त हो रहा है। 14 नवंबर 2021 को जवाहरलाल नेहरु समागम पुरस्कार मुख्यमंत्री माननीय भूपेश बघेलजी के द्वारा, प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। 3 फरवरी 2022 को राष्ट्रीय कांग्रेस अध्यक्ष माननीय राहुल गांधी जी के समक्ष छत्तीसगढ़ राज्य शासन की योजनाएं , जो कोरोना काल के दौरान बच्चों को किस प्रकार अध्ययन कराएं , इसके बारे में माननीय राहुल गांधी जी को मेरे द्वारा विस्तार से बताया गया, और मुझे राज्य का प्रतिनिधित्व करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ ।यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में 18 नवंबर 2021 से अभिभावक मित्र का गठन किया गया। गठन करने वाला ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला राज्य और पूरे भारतवर्ष का पहला विद्यालय है।जो अभिभावक मित्र का गठन किया और गठन के पश्चात विद्यालय का विकास दिनोंदिन होने लगा। अभिभावक मित्र अपने अधिकार कर्तव्यऔर दायित्व को पूरी तरह से समझ गए हैं। मेरे द्वारा उन्हें प्रशिक्षण भी दिया गया। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करने लगे और जब 25 अप्रैल 2022 को छत्तीसगढ़ शासन की ओर से संपूर्ण विद्यालयों में ग्रीष्मकालीन अवकाश प्रारंभ हुआ वैसे ही अभिभावकमित्रों के द्वारा बैठक रखकर बगिया कार्यक्रम का संचालन प्रारंभ किया गया। इस बगिया कार्यक्रम के द्वारा बच्चे

सुबह 7:00 से 9:00 बजे विद्यालय आकर पीटी योगा खेल चित्रकला गणित के सवाल पढ़ना लिखना गतिविधि स्वयं से खेल खेल में कर के सिखते हैं।

गदलपुर,शुक्रवार 06 मई 2022 | 08

अभिभावक मित्र के द्वारा बगिया कार्यक्रम का संचालन

नारायणपुर(प्रातःइंडिया)। छत्तीसगढ़ के सबसे दूरस्थ अंचल नारायणपुर जिला के आश्रित ग्राम पंचायत करमरी के अधीन ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में 18 नवंबर 2021 को अभिभावक मित्र का गठन किया गया ।अभिभावकों मित्रों को एक दिवसीय प्रशिक्षण मोटरसाइकिल गुरु जी देवेंद्र देवांगन के द्वारा दिया गया । अभिभावक मित्रों को उनकी कार्य और कर्तव्यों के बारे में विस्तार से इस प्रशिक्षण के माध्यम से बताया गया। उसके बाद धीरे धीरे शाला विकास योजनाओं से संबंधित अभिभावक मित्रों में जागरूकता देखने को मिला। विद्यालय में चारदिवारी नहीं होने के कारण हमेशा विद्यालय परिसर में मवेशियों का आना जाना रहता था। इसको देखते हुए अभिभावक मित्रों के द्वारा पहला कार्य अस्थाई रूप से चारदीवारी का निर्माण किया गया। भवन की स्थिति जर्जर को देखते हुए,अभिभावक मित्रों के द्वारा ग्राम पंचायत स्तर पर आवेदन दिया गया है। प्रति माह अभिभावक मित्रों का बैठक होता है। जिसमें अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए शिक्षक मोटरसाइकिल गुरु जी देवेंद्र देवांगन के साथ मिलकर अन्य योजनाओं का निर्माण कर उन पर कार्य करना प्रारंभ कर दिए। मात्र तीन-चार माह में ही विद्यालय का विकास होता दिखाई दे रहा है। बहुत ही कम कार्यकाल के दौरान भी अभिभावक मित्र की सफलता ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में देखने को मिलता है । आज छत्तीसगढ़ शासन की ओर से सभी विद्यालयों में ग्रीष्मकालीन अवकाश घोषित होने के पश्चात अभिभावक मित्रों के द्वारा ही नए कार्यक्रम बगिया का संचालन करने हेतु दिशा निर्देश तय किया गया। बगिया कार्यक्रम के तहत बच्चों को सुबह 7-00 से 9-00 बजे तक विद्यालय परिसर में आकर दो घंटा अध्ययन करने के लिए, सभी अभिभावक मित्रों के द्वारा अपने बच्चों को विद्यालय भेजने हेतु तत्पर हैं, क्योंकि यदि बच्चे विद्यालय नहीं जाएंगे तो उनकी शैक्षणिक स्तर दिनों दिन गिरता जाएगा। यह सभी अभिभावक मित्रों का फैसला है ।इस बगिया कार्यक्रम का संचालन मोटरसाइकिल गुरुजी और अतिथि शिक्षक श्री मनोज यादव जी के द्वारा किया जा रहा है। पढ़ाई के साथ साथ खेल खेल में शिक्षा दिया जा रहा है। इस से सभी बच्चों में एक प्रकार की नई उमंग दिखाई दे रहा है।

अभिभावक मित्रों द्वारा का विशेष पहल

ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के अभिभावक मित्रों द्वारा बच्चों को प्रतिदिन सुबह 7-00 से 9-00 बजे विद्यालय भेजा जाता है ,जिससे वह बेहतर तरीके से अध्ययन कर सकें। आज बस्तर क्षेत्र के हरे सोने के नाम से जाने वाले तेंदूपत्ता संग्रहण का सीजन चल रहा है,उसके बावजूद भी अभिभावक गण अपने बच्चों को प्रतिदिन स्कूल भेज रहे हैं। अभिभावक मित्रों के सहयोग से ग्राम उप सरपंच श्री सुखदेव वड्डे और ग्राम सचिव श्री वनीष साहू के द्वारा बगिया कार्यक्रम का सफल संचालन के लिए बच्चों को टी-शर्ट प्रदान किया गया।।

बगिया कार्यक्रम का संचालन

नारायणपुर जिला का प्रथम विद्यालय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में बगिया कार्यक्रम का संचालन किया जा रहा है । जिसमें बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ,पढ़ाई, चित्रकला,खेल योगा पीटी कराया जा रहा है। जिससे बच्चे खेल खेल में ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और उनकी रूचि के अनुसार उन्हें स्वतंत्र छोड़ दिया जाता है ।जिससे वे अपने आधार पर अध्ययन या खेल खेलते हैं। गया कार्यक्रम के सफल संचालन से अभिभावक मित्र काफी प्रसन्न हैं।।

भारत के अन्य राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशों में मोटरसाइकिल गुरुजी के रूप में देवेंद्र देवांगन की अलग पहचान बना हुआ है।

राजधानी में आयोजित दो दिवसीय जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय समागम 2021 में शिक्षकों ने कोरोना काल में शिक्षकों द्वारा किए गए नवाचार को लेकर प्रदर्शनी लगाई गई थी जिसमें ना केवल छत्तीसगढ़ बल्कि अन्य राज्यों एव केंद्र शासित प्रदेश के शिक्षकों ने भी अपने मॉडलों के जरिए शिक्षा के क्षेत्र में किए गए नवाचारों को बताया माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेश बघेल जी छत्तीसगढ़ शासन एवं माननीय शिक्षा मंत्री डॉक्टर प्रेमसाय टेकाम जी के द्वारा भी मोटरसाइकिल गुरुजी के रूप में काफी तारीफ किया गया।

अभिभावक मित्रों के सहयोग से शाला विकास दिनों दिन हो रहा है। क्योंकि शाला के लिए शाला विकास योजना अभिभावक मित्रों के द्वारा बनाया गया है उसी योजना को ध्यान में रखते हुए नए भवन की मांग पूर्ण हो चुका तथा भवन बनाना प्रारंभ हो चुका है। संकुल के अन्य शालाओं में भी अभिभावक मित्र गठन करने के लिए प्रयास किया जा रहा है।

----------------------*******----------------------

समुदाय का वर्णन

अति संवेदनशील और नक्सल प्रभावित क्षेत्र होने के कारण गांव में किसी प्रकार से कोई बैठक का आयोजन नहीं किया जा सकता था। क्योंकि जो गांव में बैठक या अन्य गतिविधियां

करते हैं तो उसकी सजा सिर्फ और सिर्फ मौत था। जिसके कारण समुदाय से संपर्क बहुत ही कम होता था । मुझे कोई भी जानकारी प्रत्येक घर में जाकर पालकों को मौखिक रूप से बताना पड़ता था। इसी के कारण मुझे समुदाय का सहयोग प्राप्त नहीं हो पाता था। विद्यालय में किसी भी प्रकार की सांस्कृतिक कार्यक्रम या अन्य गतिविधियां बच्चों के साथ मिलकर हम नहीं कर सकते थे। गांव में कोई सुविधा उपलब्ध नहीं था। कई वर्षों तक असुविधाओं के बीच बच्चों को अध्ययन कराना बहुत ही मुश्किल साबित हो रहा था। लेकिन धीरे-धीरे समय बदलता गया और 2015 में समुदाय को बहुत विषम परिस्थिति के बावजूद , उन्हें विद्यालय तक लाया गया। इसके लिए मुझे ग्राम के वरिष्ठ महिलाओं का सहयोग लेना पड़ा, क्योंकि इससे पहले कभी गांव में अपने हाथों में आदिवासी महिलाएं मेहंदी नहीं लगाए थे।

घोर नक्सल प्रभावित कोडोली नरिया की ग्रामीण महिलाओं ने पहली बार हाथों में लगाई मेहंदी

सामुदायिक सहभागिता के तहत शिक्षक देवेंद्र देवांगन ने कराया आयोजन

बच्चों ने बनाया सब्जियों का गुलदस्ता

क्विज प्रतियोगिता से परखा बच्चों का ज्ञान

मैंने मेहंदी प्रतियोगिता में वरिष्ठ महिलाओं के हाथों में मेहंदी लगाया।   जिससे सभी काफी प्रसन्न हुए। वहीं से समुदाय का विद्यालय के प्रति आत्मविश्वास बढ़ा और मुझे समुदाय का सहयोग मिलना प्रारंभ हुआ। धीरे-धीरे गांव की युवा वर्ग को विद्यालय की ओर आकर्षित करने लगा। महिलाओं के ऊपर हो रहे अत्याचार के बारे में उन्हें अवगत कराया। महिला उत्पीड़न को रोकने के लिए गांव में छोटी सी रैली का आयोजन कर उन्हें मेरे द्वारा समझाया गया। कोडोली और करमरी के युवा वर्ग और युवतियां जिला ,हाट बाजारों में आकर आधुनिक साधनों को देखकर अपने आप को आधुनिकता में रंगने के प्रयास के कारण अपने आदिवासी संस्कृति को दिनों दिन पीछे छोड़ते जा रहे थे

ऐसे में गांव की युवा युवतियों को जोड़कर मैंने एक विवेकानंद स्व सहायता समूह का गठन मेरे द्वारा किया गया और उन्हें स्थानीय बाजारों में व्यवसाय से जोड़कर होटल और वनों से प्राप्त संपदा को खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया। और धीरे-धीरे उनका रोजगार और व्यवसाय चलने लगा साथ आधुनिकता की इस दौड़ में वह अपनी संस्कृति को छोड़ चुके थे। मेरे द्वारा विवेकानंद नृतक दल का गठन कर उन्हें अपने संस्कृति से जोड़ा और उनके साज सज्जा सम्मान खरीदी के लिए 2000 की राशि देकर उन्हें नृत्य से संबंधित कुछ विशेष बातों को अवगत कराया और मेरी ही द्वारा उन्हें सर्वप्रथम नारायणपुर जिला मुख्यालय में नृत्य करने के लिए प्रेरित कर जिला मुख्यालय तक लाया।

दैनिक भास्कर **बस्तर भास्कर** 27-04-2023

प्राथमिक शाला कोडोली में मनाया पढ़ई तिहार

नारायणपुर| ग्राम पंचायत करमरी के आश्रित ग्राम कोडोली में ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला में मंगलवार को अंगना म शिक्षा के तहत पढ़ाई तिहार मनाया गया। जिसमें गांव के सभी माताओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। विजेताओं को प्रमाण पत्र दिया गया। अभिभावक मित्र माताओं के सहयोग से विद्यालय की स्वच्छता, बच्चों की स्वच्छता, उपस्थिति, मध्यान्ह भोजन गुणवत्ता, पढ़ाई, सामाजिक आर्थिक सर्वे कार्य में सहयोग निरंतर प्राप्त हो रहा है। ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में पढ़ाई तिहार में लक्ष्मीबाई वड्डे को पहला व बुधनीबाई वड्डे को दूसरा स्मार्ट माता का स्थान प्राप्त हुआ।

उसके बाद धीरे-धीरे जिला एवं अन्य जिलों में जाकर विवेकानंद नृतक दल द्वारा अपनी प्रस्तुति देना प्रारंभ किए। आज वर्तमान स्थिति में विवेकानंद नृतक दल द्वारा विकसितभारत संकल्प यात्रा के दौरान विवेकानंद नृतक दल नृत्य प्रस्तुत किया गया जिसे जिला स्तर पर काफी सराहना मिला। उसके बाद गांव की युवा युवतियों का विश्वास मेरे प्रति दिनों दिन बढ़ने लगा और स्कूल के कार्यों में सहयोग मुझे निरंतर प्राप्त होता रहा है।

नरिया कोडोली में खुली पहली दुकान

नारायणपुर. जिला मुख्यालय से महज 22 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत करमरी के आश्रित ग्राम नरिया कोडोली में पहली बार दुकान खुली. स्व सहायता समूह मे 23 सदस्य हैं. समूह अध्यक्ष मनकुर गोटा और रामूराम सलाम उपाध्यक्ष एवं सदस्यों ने मंगलवार करमरी बाजार में पहली बार होटल लगाया . इस होटल मे भजिया जलेबी समोसा मीठा भजिया नड्डा आदि बिक्री किया. चिकन मार्केट भी खोला गया पहली बार दूरस्थ अंचल की युवाओं के द्वारा अपना दुकान पाकर बहुत ही उत्साहित हैं स्पष्ट रूप से उनके . शिक्षक देवेंद्र देवांगन की पहल से ग्रामवासी एवं पंचायत के सभी ग्रामों मे चर्चा की सुर्खियों में चल रहा है.

गांव के 5 युवा वर्ग अपने अध्ययन कार्य को सुचारू रूप से नहीं कर पाए और बीच में ही पढ़ाई छोड़ चुके थे मैंने अपने प्रयासों के माध्यम से उन्हें दसवीं और 12वीं उत्तीर्ण छत्तीसगढ़ राज्य

ओपन शिक्षा के माध्यम से उन्हें 12वीं उत्तीर्ण करवाया। गांव की जो कम पढ़े-लिखी युवक और युवतियों को छत्तीसगढ़ कौशल योजना के माध्यम से प्रशिक्षण दिलाया गया। जिला मुख्यालय से काफी दूर होने के कारण यहां पर मात्र कृषि कार्य और वनों से प्राप्त वन उपज पर ही समस्त ग्रामवासी निर्भर रहते हैं । यहां का खेती प्राचीन पद्धति पर करते हैं। जिसके कारण यहां की उपज बहुत ही कम होता है इसीलिए समस्त ग्रामवासी वनों से प्राप्त वन संपदा पर ही अधिकतर निर्भर रहते हैं।

सामाजिक जागरूकता नारायणपुर जिले के अंतर्गत सुदूर पहाड़ियों एवं वनों की प्राकृतिक सुरमयता के बीच बस एक छोटा सा गांव नरिया कोडोली यह जिला मुख्यालय से 22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है दूरस्थ अंचल होने के कारण यहां पर किसी प्रकार की आधुनिक साधन के बारे में किसी भी महिला को जानकारी नहीं है

इस कारण महिलाओं और किशोरी युक्तियां को स्वच्छता संबंधित जानकारी नहीं होने के कारण वह गंभीर बीमारियों के शिकार हो जाते हैं ।मासिक चक्र नारी की शरीर शारीरिक प्रक्रिया है लेकिन समाज में इसके साथ ही रूढ़िवादी सोच अंधविश्वास और गैरजरूरी परिजनों को जोड़कर इस रीति के लिए शारीरिक मासिक रूप से भी कठिन दिनों में बदल दिया है। पुरानी ढरों से चली आ रही रीत

मासिक चक्र से गुजर रही नारी, बालिका को पूजा स्थल और रसोई घर और धार्मिक आयोजनों में भाग लेने से रोकते आई है पुरुष प्रधान समाज में इस विषय पर में नहीं उत्तर ही मिलते हैं।

स्वयं महिलाएं भी अपने जीवन की एक महत्वपूर्ण पक्ष और प्रक्रिया पर खुलकर बात करने में बहुत संकोच महसूस करती है ।ऐसे में समय की मांग है कि विद्यालय में कन्याओं और उनकी माताओं से इन विषय पर कैसे बात किया जाए यह एक सोचनीय विषय था। क्योंकि मैं एक पुरुष शिक्षक होने के कारण मुझे बहुत ही ज्यादा संकोच हो रहा था। लेकिन गांव की मितानिन से मेरे द्वारा संपर्क किया गया और मितानिन महिलाओं से बात कर उन्हें इस विद्यालय समस्या से अवगत कराया गया ।उनके सहयोग से आंगनबाड़ी कार्यकर्ता श्रीमती जाएंगेबाई से संपर्क किया गया ग्राम की मितानिन एवं आंगनबाड़ी कार्यकर्ता के सहयोग से एक एनजीओ संस्था के महिला कर्मचारी से संपर्क कर उन्हें पूरी बात बताया गया ।

इसके पश्चात विद्यालय में एक कार्यक्रम रखने का निर्णय लिया गया मासिक चक्र के महत्व शारीरिक स्वच्छता सेनेटरी का इस्तेमाल और उपयोग में लाई गई सेनेटरी को नष्ट करने के तरीके बताए गए उप स्वास्थ्य केंद्र गोटाबेनूर की नर्स श्रीमती हेमलता तारम एन जी ओ साथी संस्था के श्रीमती निर्माणी आंगनवाड़ी कार्यकर्ता मितानिन एवं गांव की किशोरी बालिकाएं माताएं सभी को जोड़कर इसी दिशा में जागो सखियां एक कदम स्वच्छता की ओर यही मेरा प्रयास था। ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला को डोली में समय-समय पर जागरूकता संबंधी रैली का आयोजन ग्राम नारिया में किया जाता है।

समस्या की स्थिति

छत्तीसगढ़ की सबसे दूरस्थ अंचल नारायणपुर जिला के अबूझमाड़ क्षेत्र के चारों ओर पहाड़ियों से घिरा हुआ एक छोटा सा गांव कोडोली नरिया आधुनिक सुख सुविधाओं से काफी दूर था यहां पर ना ही सड़क था ना ही नदी नालों में फूल पुलिया था आवागमन के साधन मात्र बरसात में पैदल ही आना जाना होता था। किसी प्रकार की आवश्यकता की पूर्ति हेतु उन्हें जिला तक आना पड़ता था। यहां तक इस ग्राम में लाइट सुविधा भी नहीं था शाम होते ही पूरा ग्राम पंचायत के समस्त ग्राम अंधकार में डूब जाता है ।अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण विकास काफी दूर था। इसी कारण ग्राम पंचायत में किसी भी विद्यालय में शिक्षा का स्तर बहुत कम था ग्राम पंचायत करमरी के प्राथमिक शाला करमरी 1963 से विद्यालय संचालित है ।

लेकिन आज तक शिक्षा का स्तर बहुत ही कम था। क्योंकि 2018 में पंचायत की लगभग 6 बच्चों ने 12वीं उत्तीर्ण किये । इससे पहले कोई भी बच्चा आठवीं के बाद आगे की पढ़ाई नहीं कर पाता था मेरे द्वारा उन बच्चों को घर तक जाकर समझाइश देकर पुनः मुख्य धारा से जोड़ने का प्रयास किया गया और अंततः ग्राम पंचायत करमरी के आश्रित ग्रामों के बच्चे 12वीं उत्तीर्ण कर लिए शिक्षा का प्रतिशत देखा जाए तो मात्र 10% से ज्यादा ग्राम पंचायत स्तर में नहीं था। लेकिन मेरे प्रयासों के द्वारा आज शिक्षा का स्तर लगभग50% पहुंच चुका है क्योंकि ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के बच्चों का स्तर देखकर अन्य स्कूलों के शिक्षक भी मेरे कार्यों को देखकर वह भी बच्चों के स्तर को सुधारने में लगे हुए हैं। जिससे शिक्षा का स्तर धीरे-धीरे सुधार रहा है आज ग्राम पंचायत में प्राथमिक विद्यालय सात हैं। और एक उच्च प्राथमिक विद्यालय है। सबसे बड़ी समस्या यह है कि बच्चे आठवीं और पांचवी उत्तीर्ण करने के बाद अन्य शहरों की ओर पलायन हो जाते हैं

जिसके कारण बच्चे शिक्षा के मुख्य धारा से काफी दूर हो जाते हैं ।क्योंकि आधुनिकता के दौड़ के कारण बच्चे मोबाइल या अन्य सामान की पूर्ति हेतु अन्य राज्यों में कार्य करने हेतु पलायन करते हैं। जिसके कारण शिक्षा के मुख्य धारा से हट जाते हैं। और अपने अध्ययन को वहीं पर बंद कर देते हैं जिससे उनका भविष्य गलत राह पर चला जाता है और अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण विद्यालयों में अधिकतर एकल शिक्षक होने के कारण शिक्षा व्यवस्था सही तरह से नहीं हो पाता। सबसे बड़ी समस्या और मुद्दा यह है कि अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण पूरी तरह से विकास कार्य बंद हो गया था लेकिन धीरे-धीरे विकास की राह में ग्राम पंचायत करमरी के समस्त ग्राम आगे आ रहे हैं।

------------------------************-------------------------

परिवर्तन की शुरुआत

2015 में जब दो रूम का शाला भवन बना दिया गया उसके बाद धीरे-धीरे विद्यालय का विकास होना प्रारंभ हुआ सबसे पहली समस्या था कि बच्चों की उपस्थिति दर कैसे बढ़ाएं इसके लिए मैंने कई नवाचार करना प्रारंभ किया I यह नवाचार में शून्य निवेश पर आधारित है I यह बच्चों के लिए खेल-खेल में बहुत ही शिक्षाप्रद है क्योंकि बच्चे विद्यालय समय से पूर्व आकर खेल-खेल में स्वयं से सीखते थे। यदि कुछ परेशानी होता है तो बड़े बच्चे छोटे बच्चों का मदद कर देते हैं।उपस्थिति दर बढ़ाने में वानर सेवा का भी बहुत पूर्ण योगदान रहा क्योंकि वानर सेना के बच्चे, जो बच्चे विद्यालय नहीं आते थे उन्हें विद्यालय समय से पूर्व उनके घर में जाकर उन्हें प्रेरित कर विद्यालय लेकर आते हैं इसी कारण उपस्थिति दर में 100% वृद्धि हुआ।

ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली जिला का ऐसा विद्यालय है जहां पर उपस्थित हमेशा 100%प्रतिशत रहता है समुदाय को जोड़कर काम करना प्रारंभ किया जिससे गांव के सभी पालकगण विद्यालय आकर बैठक में अपनी सहभागिता प्रदान करने लगे क्योंकि बच्चों के शिक्षा के प्रति धीरे-धीरे सजग होने प्रारंभ हो गए। विद्यालय का अध्ययन स्तर में काफी सुधार होने लगा। लेकिन 2019 में अचानक कोविड-19 का दौर प्रारंभ हो गया जिसके कारण संपूर्ण भारतवर्ष में विद्यालय को बंद करना पड़ा। लेकिन मैंने हिम्मत नहीं हारा और पालकों से अनुमति लेकर कोविड -19 के दौरान भारत वर्ष में पहले विद्यालय था जहां पर अध्ययन सुचारू रूप से चल रहा था।

इस अध्ययन कार्य को नीति आयोग और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी जी ने भी मन की बात में काफी तारीफ किए। कोविड -19 के दौरान बच्चों का पढ़ाई काफी प्रभावित होने के बाद फिर मैंने 18 नवंबर 2021 को अभिभावक मित्र का गठन किया इस अभिभावक मित्र के द्वारा गांव की समस्त परिवार से महिला, पुरुष और युवकों युवतियों को जोड़कर विद्यालय विकास संबंधित कार्य करना प्रारंभ किया।

कार्य योजना

अभिभावक मित्र गठन करने के पश्चात इसके क्या कार्य और किस प्रकार से विद्यालय के लिए कार्य कर सकते हैं ।इन बातों को सभी आए हुए माता-पिताओं एवं गांव की वरिष्टों के सामने रखा और एक कार्य योजना बनाना प्रारंभ किये । पहले मुझे ज्ञान दीप शिक्षा पुरस्कार से ₹5000 राशि के बारे में समस्त अभिभावक मित्रों को बताया और उनसे भी आग्रह किया कि प्रत्येक परिवार से ₹100 देकर हम एक स्मार्ट टीवी का क्रय कर बच्चों को बेहतर तरीके से अध्ययन कर सकते हैं ।इसके लिए कार्य योजना तैयार किया गया और सभी परिवारों से ₹100 की राशि प्राप्त कर एक स्मार्ट टीवी खरीदा गया लेकिन समस्या यह था

Primary School in remotest Karmari first to start 'Abhibhavak Mitra'

A brainstorming session going on at Gyan Jyoti Primary School Kodoli.

Children collecting donation from every house for arranging smart classes.

Staff Reporter
RAIPUR, Dec 1

IN A brainstorming session for better education system for the children in Chhattisgarh, S K Upadhyay from Delhi highlighted Delhi government's unique initiative 'Kalpana Abhibhavak Mitra'. But today by 'Motorcycle Guruji' of Gyan Jyoti Primary School Kodoli at remotest Karmari gram panchayat of Narayanpur district has put the name of Chhattisgarh on the national map.

Gyan Jyoti Primary School, Kodoli, is the first school of Chhattisgarh, which realized the dream by forming 'Abhibhavak Mitra' on November 18, 2021. The idea of the scheme is to add parents to the school as friends, so that the school system can be further strengthened and studies of the children can go on smoothly.

As parents are the closest to the children and it is very important for them to treat their children in a friendly manner, it is important to connect the parents in the school. Chamaram Vadde was unanimously made the president of 'Abhibhavak Mitra' and Sadhu Ram as vice-president and Kasru Ram as secretary. They promised to give best education to the children of the village. On the proposal of Motorcycle Guruji Devendra Dewangan, every family decided to deposit Rs 100 per, so that equipment for smart classroom can be arranged. All the parents present gave their unanimous consent. Due to being a very remote area, there is a lack of network facility and parents are always ready to provide better education to their children even though they are uneducated.

कि बिजली की तार स्कूल विद्यालय से काफी दूर था लेकिन फिर सभी ने सहयोग कर बिजली तार खरीद कर अस्थाई रूप से टीवी को चलना प्रारंभ किया गया जिससे सभी अभिभावक मित्र काफी प्रसन्न थे। अभिभावक मित्रों का एक दिवसीय प्रशिक्षण मेरे द्वारा उन्हें दिया गया । कि उनका कार्य क्या है ,? कर्तव्य क्या है ? और विद्यालय के प्रति उनका दायित्व क्या है ?इसके बारे में मैंने उन्हें विस्तार से दिनभर समय देकर समझाया इस कार्य में गांव की ही युवा अरजूराम ने मुझे सहयोग किया। सबसे पहले हमने जर्जर हुए विद्यालय के लिए एक कार्य योजना बनाना प्रारंभ किए यह कार्य योजना 1 वर्षीय था ।

इस कार्य योजना में हमें क्या-क्या करना चाहिए इस पर ज्यादा कार्य किया गया। उपस्थित दर में और वृद्धि के लिए अभिभावक मित्रों एवं युवा व्यवसाईयों के द्वारा पुरस्कार सप्ताह एवं मासिक पुरस्कार का आयोजन किया गया जिसके कारण बच्चों की उपस्थिति 100% विद्यालय में बना हुआ रहता है। क्योंकि भवन की स्थिति बहुत ही ज्यादा जर्जर हो चुका था छत और दीवार भी बहुत ज्यादा फटा हुआ था नीचे फर्श भी पूरी तरह से खराब हो चुका था जिससे बच्चे नहीं बैठ पाते थे। बच्चों के सहयोग से फर्श पर मिट्टी से बराबर कर उसे लेवल किया गया। ताकि बच्चे जमीन में अच्छे से बैठ सके इन विषम परिस्थिति में अभिभावक मित्र का सहयोग मुझे प्राप्त हुआ। मैंने अभिभावक मित्रों का लगातार माह में दो बार बैठक रखना प्रारंभ किया। बैठक रखने के बाद हमने सबसे पहले संकुल स्तर पर आवेदन दिया, नए भवन के लिए उसके बाद जिला एवं ब्लॉक स्तर पर आवेदन देना प्रारंभ किया। जब सभी अभिभावक मित्र महिला पुरुष नारायणपुर जिला जाकर कलेक्टर महोदय को आवेदन दिए उसके पश्चात ही नए भवन की स्वीकृति प्राप्त हुआ लेकिन अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण ग्राम में भवन बनाना नामुमकिन था।

लेकिन अभिभावक मित्रों का सहयोग मुझे निरंतर प्राप्त होता गया । मैंने हिम्मत नहीं हारा और कई बैठक का आयोजन कर अभिभावक मित्रों को स्पष्ट रूप से कह दिया था कि यदि भवन नहीं बनता है, तो मैं यह विद्यालय छोड़कर अन्य विद्यालय में अपना स्थानांतरण कराकर चल दूंगा लेकिन अभिभावक मित्रों का कहना था कि सर आपको हम इस गांव से जाने नहीं देंगे। इसलिए सभी अभिभावक मित्र एकत्र होकर नक्सलियों से मिलने हेतु दूसरे गांव चल दिए और कई बार जाने के बाद उनसे मिलकर उन्हें आग्रह किया कि हमारे गांव में यह भवन बनने दीजिए क्योंकि हमारे गांव में जो भवन है वह बहुत ही जर्जर हो चुका है कभी भी गिर सकता है आखिरकार शिक्षा के महत्व को नक्सलवादियों जानते हैं। इसलिए उनके द्वारा मना नहीं किया गया। और फिर धीरे-धीरे भवन बनना प्रारंभ हुआ एक वर्ष के अंदर नया भवन बनकर तैयार हुआ।

परिणाम

ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली को नए भवन का निर्माण में अभिभावक मित्रों की कार्य योजना के माध्यम से 4 अक्टूबर 2023 को नए भवन का उद्घाटन जिला पंचायत अध्यक्ष महोदया श्रीमती श्यामबती रजनू नेताम एवं जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री देवनाथ उसेण्डी जी ,जनपद अध्यक्ष श्री पंडीराम वड्डे एवं जिला सदस्य श्रीमती भगवती पिस्दा ,अभिभावक मित्र अध्यक्ष श्री चमरा राम उपाध्यक्ष कसरूराम सचिव श्री चमरूराम एवं समस्त अभिभावक मित्रों की उपस्थिति में ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली का उद्घाटन किया गया ।

इस उद्घाटन के समय में सभी ग्राम पंचायत में जाकर पीला चांवल देकर सभी ग्राम वासियों को निमंत्रण दिया गया था। कई वर्षों की सतत प्रयास से आज ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली को

नए भवन की प्राप्ति हुआ। जिससे समस्त अभिभावक मित्र एवं ग्राम पंचायत के सभी ग्रामवासी इस भवन को देखकर काफी खुश हैं।

क्योंकि ऐसा भवन आज तक उनके द्वारा देखा नहीं गया था। और अपने गांव तथा अन्य गांव की युवक,युवतियों द्वारा आकर पूरे चित्र को देखकर अपना सेल्फी फोटो भी खींचकर ले जाते हैं। क्योंकि पढ़ाई के साथ-साथ यहां का प्रिंट रिच वातावरण बहुत ही लुभावन है।

---------------*************--------------

परिवर्तन लाने में लगा समय, इसमें शामिल प्रतिक्रियाएं, असफलताएं, सफलताएं, सबसे महत्वपूर्ण बात शिक्षा

"परिवर्तन का मानव मन पर काफी मनोवैज्ञानिक प्रभाव पड़ता है। भयभीत लोगों के लिए, यह खतरनाक है क्योंकि इसका मतलब है कि चीजें बदतर हो सकती हैं। आशावानों के लिए, यह उत्साहजनक है क्योंकि चीजें बेहतर हो सकती हैं। आत्मविश्वास से भरे लोगों के लिए, यह प्रेरणादायक है क्योंकि चीज़ों को बेहतर बनाने की चुनौती मौजूद है।" - किंग व्हिटनी जूनियर

"सबसे कठिन काम कार्य करने का निर्णय है; बाकी केवल दृढ़ता है। डर कागजी शेर हैं। आप जो भी करने का निर्णय लेते हैं वह कर सकते हैं।" - अमेलिया ईअरहार्ट

सुविधा विहीन स्कूल जो इमली के पेड़ नीचे संचालित कर कई चुनौतियों का सामना करते हुए। आज एक नए भवन तक का सफर करने में 18 वर्ष का समय लग गया कहते हैं कि असफलता ही सफलता की पहली सीढ़ी है। इसी विश्वास के साथ मैं लगातार प्रयास करता रहा जिसके कारण गांव की स्थिति और विद्यालय की स्थिति में दिनों दिन सुधार होने लगा। आज पूरे ग्रामवासी मेरे साथ बहुत ही अच्छे से हिंदी में बात कर लेते हैं जिससे मेरा परेशानी बहुत कम हो गया है। क्योंकि जब बच्चें घर में जाते हैं तो अपने माता-पिता से हिंदी में बात करते हैं। जिसके कारण पढ़ाई के स्तर में काफी सुधार होने लगा । ग्राम कोडोली में पहले कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति नहीं था ।लेकिन वरिष्ठ नागरिक भी आज अपना नाम लिखने सीख गए हैं ।

क्योंकि 08 सितंबर को विश्व साक्षरता दिवस के अवसर पर मैंने सभी ग्राम वासियों समुदाय को एकत्रित कर उन्हें अपने नाम लिखने के लिए जमीन में ही लिखकर दिखाया और वह बार-बार लिखकर अपना नाम सिख गए । अब जहां पर भी उन्हें आवश्यकता होता है। हस्ताक्षर में अपना नाम लिख लेते हैं ।

नहीं तो अशिक्षित होने के कारण मात्र अंगूठे का ही निशान लगाते थे। लेकिन समय के साथ समस्त समुदाय चल रहा है। जिससे यह मेरे लिए भी बहुत बड़ी सफलता है । क्योंकि समस्त ग्रामवासी शिक्षा के महत्व को अच्छी तरह से जान चुके हैं आज ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के बच्चे पांचवी कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात अन्य विद्यालयों में मैं स्वयं ले जाकर प्रवेश दिलाता हूं। तथा छात्रावास की सुविधा भी प्रदान किया जाता है ।आज ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के बच्चे अन्य स्कूलों में पढ़ते हैं।और वे सभी मेरे मार्गदर्शन के अनुरूप चल रहे हैं।

जो बच्चे बीच में अपने शिक्षा को छोड़ चुके थे उन्हें इस वर्ष छत्तीसगढ़ राज्य शासन ओपन परीक्षा के माध्यम से दसवीं की परीक्षा और 12वीं की परीक्षा हेतु फॉर्म भर लिया गया है जो बच्चे 12वीं विज्ञान संकाय लेकर अध्ययन कर रहे हैं उन्हें पीएमटी और पीईटी परीक्षा की तैयारी के लिए मार्गदर्शन मेरे द्वारा लगातार दिया जा रहा है। आज ग्राम कोडोली अन्य गांव से काफी आगे बढ़ चुका है विकास की नई राह में चलना प्रारंभ कर चुका है।प्राथमिक शाला के बच्चे पढ़ाई के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भाग लेते हैं

संकुल स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में भी प्रतिवर्ष प्रथम और द्वितीय स्थान प्राप्त करते हैं जिससे सभी पालक गण काफी प्रसन्न है ।और हमेशा समुदाय का सहयोग निरंतर विद्यालय को प्राप्त होता रहता है ।समय जरूर लगा बदलाव होने में लेकिन विश्वास था।कि एक न एक दिन मेरे गांव में सुधार होगा और पूरा समुदाय मुझे सहयोग प्रदान करेगा आज वह दिन आ गया है क्योंकि ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली का नाम जिला एवं राज्य में अलग पहचान बन चुका है।

-----------------***************---------------

स्कूल नेतृत्व की भूमिका, स्कूल के प्रमुख द्वारा व्यवहार मॉडलिंग और उदाहरण स्थापित करना और परिवर्तन से संबंधित अन्य कारक, अन्य प्रमुख प्रभावशाली व्यक्तित्व /समूह उनकी भावनाएं/ विचार (उद्धहरण के रूप में शब्दशः व्यक्त)

शैक्षणिक प्रणालियों और विद्यालयों के भीतर विभिन्न प्रकार के परिवर्तन होना आम बात है। इसके प्रेरक बाहय और आंतरिक इन दोनों के संयोजन हो सकता है। अधिकांश मामलों में अंतिम लक्ष्य वर्तमान अवस्था में भविष्य की किसी अधिक वंचित अवस्था में जाना होता है। विद्यालय की संदर्भ की भीतर इसका संबंध अंततः छात्रों की शैक्षणिक सुधार में करने से होता है चाहे अध्यापन

और सीखने की प्रक्रिया में प्रत्यक्ष परिवर्तन के माध्यम से या सीखने की प्रक्रिया में सहायता के लिए विद्यालय की संरचनाओं प्रणालियां में सुधार के माध्यम से।

मैं अपने विद्यालय या शैक्षणिक परिवेश में परिवर्तन के अर्थ पर विचार करते हुए, विभिन्न दृष्टिकोण पर नजर डालते हुए जैसे सहयोगात्मक वितरित प्रजातांत्रिक और रूपांतनात्मक की विभिन्न दृष्टिकोण और परिवेशों को शैक्षणिक नेतृत्व के साथ जोड़ रखा। प्रेरणा और विश्वास को परिवर्तन के महत्व का प्रेरक मनाते हुए समुदाय एवं अन्य लोगों को विद्यालय में सहयोगात्मक रूप से जोड़ रखा है, जिसके कारण नित्य प्रतिदिन धीरे-धीरे विकास होना प्रारंभ हुआ।

स्व दैयन्दनीय

स्वदैयनंदिनी इसमें प्रत्येक बालक के उच्च स्तर एवं स्तर आकलनों से संबंधित तथा दिन पहले पाठ योजना तैयार कर मैं विद्यालय ले जाता हूं। जिससे बच्चों के संपूर्ण क्रिया प्रक्रिया के बारे में मुझे भली भांति जानकारी है । जिसके कारण बच्चों के स्तर में सुधार आसानी से किया जाता है। क्योंकि एकल शिक्षक होने की वजह से मुझे स्वनंदिनी काफी मददगार साबित होता है। क्योंकि मैं इसके आधार पर प्रत्येक बच्चे के स्तर के बारे में बहुत आसानी से पता चल जाता है।

प्रत्येक बच्चे के लिए सीखने की डायरी बनाकर उसमें सभी प्रकार के नोट्स तथा उपयोगी चीजों को उन पर अंकित किया जाता है ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में प्रत्येक बच्चे का एक **FLN बॉक्स** बनाया गया है जिससे उन्हें अपने स्तर तथा आकलन के बारे में बहुत आसानी से जानकारी प्राप्त होता है।

परिवर्तन

परिवर्तन मेरे लिए बहुत ही आवश्यक था। साथ ही बच्चों के शैक्षणिक स्तर को और किस प्रकार से सुधार किया जा सके इस पर मैंने कार्य करना प्रारंभ किया जिसके कारण मुझे कई प्रकार की चुनौतियों का नित्य सामना करना पड़ा क्योंकि सबसे बड़ी परेशानी स्थानीय बोली था। और मुझे

स्थानीय बोली नहीं आने के कारण बच्चों और मेरे बीच में यह मुख्य चुनौती के रूप में सामने आया बच्चों के साथ नित्य छोटे-छोटे प्रयोग करना प्रारंभ किया जिससे उन्हें समझ आना प्रारंभ हुआ।

बच्चों एवं समुदाय को किस प्रकार विद्यालय में जोड़ा जाए यह मेरे लिए बहुत ही सोचनीय विषय था। मैंने धीरे-धीरे समुदाय एवं बच्चों को गतिविधि के माध्यम से विधालय तक लाना प्रारंभ किया जिसके कारण छात्र छात्राओं को अपने उद्देश्य तक पहुंचने में काफी सहायक हुआ। कई ऐसे बाह्य कारक हैं जिसके कारण मुझे उनको विद्यालय की मुख्य धारा में जोड़ने में काफी आसानी हुआ परिवर्तन में समय जरूर लगता है लेकिन यह परिवर्तन बहुत ही प्रभावशील होता है जो बच्चों के लिए भविष्य में अपने मार्ग को प्रस्तुत करने में सहायक होता है

क्योंकि शासन के अनुसार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, शिक्षा का अधिकार अधिनियम, सर्व शिक्षा अभियान मध्यान भोजन ऐसे कई प्रकार की क्रियाओं से जोड़ कर विद्यालय में बच्चों के ऊपर अपनाया जाता है एकल शिक्षक होने की वजह से मुझे परिवर्तन करते समय कई प्रकार के चुनौतियों का सामना करना पड़ता । परिवर्तन का आरंभ करके अंत तक एक शिक्षक के रूप में अन्य लोगों के साथ कैसे काम शुरू करूं यह मेरे लिए बहुत ही बड़ा प्रश्न चिन्ह था। उपस्थिति बढ़ाने के लिए कई अतिरिक्त गतिविधियों विद्यालय टाइम टेबल में समायोजन कर छात्रों को बेहतर से बेहतर शिक्षा प्रदान कर सकूं, यह मेरे लिए बहुत ही चुनौती का विषय था अति संवेदनशील क्षेत्र आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण पाठ्यक्रम को भी पूरा करने का दबाव हमेशा बना हुआ रहता है लेकिन छात्रों को सृजनात्मक खेलकूद की गतिविधियों में भाग लेने का थोड़ा समय देने की आवश्यकता होता है। एक गतिविधियां छात्रों के समग्र विकास के लिए काफी महत्वपूर्ण होते हैं इसके अलावा छात्रों की उपस्थिति दर में वृद्धि कैसे करें यह भी चिंता का विषय था ।

उन्हें विद्यालय में रहने के लिए प्रेरित करने के लिए एक साधन की तलाश करने की आवश्यकता था लेकिन मैं इन सब चुनौतियों का सामना करते हुए मैंने कई प्रकार की गतिविधियां करना प्रारंभ किया तथा मेरे द्वारा वानर सेना का गठन कर उपस्थिति दर में वृद्धि किया, कई प्रभावशील अनूठी गतिविधियों के माध्यम से समय और समय से पूर्व विद्यालय आकर कर बच्चे खेलकूद करते हुए। नवाचारों के माध्यम से स्वयं से सीखते हैं ।

एकल शिक्षक होने के कारण मुझे कक्षा पहली से पांचवी तक के बच्चों को किस प्रकार सीखा सकता हूं।यह मेरे लिए बहुत ही अचरज का विषय था और विद्यालय में आने के अतिरिक्त छात्र/छात्राओं को पढ़ाई के प्रति कैसे दिलचस्पी पर पैदा करूं । नवाचार के माध्यम से बच्चों की संपूर्ण विकास और विद्यालय में आनंदित रहने और सिखाने हेतु मैं उनके लिए अतिरिक्त समय देकर सीखने का प्रयास किया। विद्यालय में उपस्थिति सुधार के साथ-साथ विद्यालय में उन्हें आनंदमय वातावरण पैदा करना बहुत जरूरी था ।इस कार्य में विद्यालय प्रबंध समिति और गांव की कुछ युवा वर्ग मुझे हमेशा सहयोग करते रहे। पाठ्येतर गतिविधियां करते समय संसाधन संबंधी चुनौतियों का सामना भी बहुत उल्लेखनीय रूप से करना पड़ता था।

विद्यालय गतिविधियां प्रस्तुति करते समय कई प्रकार की सावधानियां बरतना पड़ता था जिनमें छात्रों को वास्तव में रुचि हो और सुनिश्चित करना पड़ता था कि लड़कियां और लड़के समान रूप से इन गतिविधियों में भाग ले सकें।

आदिवासी बहुल क्षेत्र एवं ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण बच्चे को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी नहीं होता था। और वह बगैर स्नान करके विद्यालय आते थे । और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति बहुत ही कम जानकारी रहता था। अधिकतर गांव के बच्चे मलेरिया से पीड़ित रहते थे। जिसके कारण उपस्थित

प्रभावित होता था। लेकिन धीरे-धीरे समय बदलता गया और स्वास्थ्य विभाग से मैं संपर्क कर उन्हें प्रति महीने विद्यालय आने के लिए आमंत्रित किया और जब विद्यालय में स्वास्थ्य विभाग टीम आते थे। तो बच्चे विद्यालय से ही भाग जाते थे। लेकिन मेरे द्वारा और समुदाय के सहयोग से उन्हें समझाया गया कि स्वास्थ्य सुविधाएं संबंधी जानकारी मेरे द्वारा दिया गया

जिससे प्रतिमाह बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाता है । कई बच्चे हमेशा मलेरिया से पीड़ित रहते थे। और दाद खाज खुजली के कारण भी बच्चे स्कूल आना बंद कर देते थे। लेकिन लगातार स्वास्थ्य विभाग की टीम विद्यालय आने लगे तो बच्चे भी स्वस्थ रहने लगे और उन्हें स्वस्थ स्वच्छता संबंधी जानकारी मेरे और स्वास्थ्य विभाग की टीम के द्वारा प्रति महीने दिया जाता था। जिसके कारण बच्चे स्वस्थ और निरोगी रहने लगे अति संवेदनशील क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण बच्चे हमेशा बचपन से ही कुपोषित रहते थे। लेकिन जैसे-जैसे विद्यालय में उनका प्रवेश होता गया उनके स्वास्थ्य संबंधी सुधार होने लगा क्योंकि अधिकतर अबूझमाड़ क्षेत्र के बच्चे कुपोषित होने के कारण हमेशा कई बीमारियों से ग्रसित रहते थे । लेकिन परिवर्तन धीरे-धीरे होने के कारण आंगनबाड़ी केंद्रों में भी अब स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराया जाता है। जिसके कारण ग्राम कोडोली में बहुत ही कम बच्चे कुपोषित के शिकार होते हैं जब स्वास्थ्य सुधार होने लगा तो छात्रों की उपस्थिति तथा पढ़ाई में ध्यान उल्लेखनीय रूप से बढ़ गया और अभिभावकों का समर्थन मिलने गया । ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में कार्यभार ग्रहण किया तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि इस गांव में सुधार होगा लेकिन धीरे-धीरे मेरे नेतृत्व के कारण व्यक्ति या लोगों का समूह जो काम में मुझे कभी सहयोग नहीं करेंगे सोचा था क्योंकि उस समय वस्तुस्थिति अतिसंवेदनशील क्षेत्र होने से विकास दूर दूर तक दिखाई नहीं देता था।लेकिन धीरे-धीरे सभी ने मेरा सहयोग करना प्रारंभ किए

जब 18 नवंबर 2021 को अभिभावक मित्र का गठन किया तो उसके बाद मानो कई नए-नए परिणाम आने प्रारंभ हो गए। क्योंकि विद्यालय में अभिभावकों का आना प्रारंभ हो गया। जिससे विद्यालय का शैक्षणिक स्तर के साथ-साथ अन्य प्रभावकारी गतिविधियां सामने आने लगा। लेकिन नेतृत्व की तुलना में छात्र परिणाम प्रभावशाली था ।आज नेतृत्व के एकीकृत मॉडल जिसमें निदेशात्मक वितरण और परिवर्तनकारी नेतृत्व के तत्व शामिल हैं सबसे आम है कि स्कूल में विभिन्न स्थितियों में विभिन्न प्रकार के नेतृत्व का उपयोग करना बहुत जरूरी था निर्देशात्मक और सीखने सिखाने का उपयोग करना बहुत ही प्रभावित रहा समानता के लिए नेतृत्व ढांचे भी उभर रहे थे। जैसे सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायित्व नेतृत्व जो इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है। कि स्कूल के कैसे न्याय संगत शैक्षणिक प्रणाली और छात्रों के परिणामों को बढ़ावा देता है। आज छोटा सा ग्राम कोडोली अपने शिक्षा के स्तर के कारण अन्य विद्यालयों से हटकर दिखाई देता है।

क्योंकि परिवर्तन लाने में 18 वर्ष का समय लग गया। जिसमें मैं 14 वर्ष तक एकल शिक्षक के रूप में कार्य कर रहा हूं। इस कारण से मुझे भली भांति ज्ञान था। कि इस ग्राम और मेरे विद्यालय में किस प्रकार की कमी है।

शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के शिक्षक ने कोरोना वायरस के प्रति किया जागरूक

जनधारा समाचार

नारायणपुर। नक्सल प्रभावित नारायणपुर जिले के ग्रामीण इलाकों में कोरोना वायरस से संबंधित जन जागरण अभियान चलाया जा रहा है इसी कड़ी में ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के शिक्षकों द्वारा करमरी पंचायत के आश्रित ग्रामों में जाकर समस्त ग्राम वासियों को कोरोना वायरस से संबंधित जानकारी दिया जा रहा है।

आज करमरी ग्राम पंचायत के आश्रित ग्राम नरिया कोडोली के समस्त ग्राम वासियों को कोरोना वायरस के लक्षण और सावधानियों के बारे में शिक्षक के द्वारा विस्तार रूप से बताया गया कोरोना वायरस जो आज पूरे विश्व में तहलका मचा हुआ है इस कोरोना वायरस से निपटने के लिए सबसे पहले जरूरी है कि हम स्वयं जागृत होकर और समस्त गांव.गांव में जाकर जन जागरण अभियान चलाना बहुत जरूरी हो गया है सभी ग्राम वासियों को यह बताना बहुत जरूरी हो गया है कि हम इससे बचने के लिए क्या करें और क्या ना करें ए सभी ग्राम वासियों को उनके लक्षण और सावधानियों के बारे में बताना बहुत जरूरी है संपूर्ण विश्व कोरोना वायरस डरा हुआ है सबसे पहले हमें जन जागरण अभियान चलना बहुत ही ज्यादा जरूरी है और अफवाहों से ना डर कर सावधानी एवं लक्षणों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है इसलिए ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के शिक्षकों द्वारा आज तीन ग्रामों में जाकर जनजागरण अभियान के लिए मात्र 30 मिनट के समय में सभाएं रैली लेकर सबको जागृत करना शिक्षकों का उद्देश्य है तथा साफ-सफाई से संबंधित जानकारी देना और शिक्षकों के द्वारा डेटॉल साबुन लाइफब्वॉय साबुन का वितरण किया गया क्योंकि ग्राम की दुकान में यह साबुन उपलब्ध नहीं रहता है

सावधानी बरतने की है जरूरत, डरने की नही है कोई बात

समस्त ग्रामासियों अपने कार्य को बंधकर इस जनजागरण कार्यक्रम को सभी ग्रामवासी समय देकर सुने-समझें और सावधानी बरतने का सभी ने शपथ लिया गया कोरोना वायरस से संबंधित वीडियो एवं लक्षणों जानकारी के लिए मोबाइल से सहयोग लेकर सभी को दिखाया और बताया गया। जनजागरण कार्यक्रम में अतिथि शिक्षक मनोज कुमार यादव और शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के सहायक शिक्षक देवेंद्र देवांगन का कार्य सराहनीय है ।

और इन कमियों को मैं कैसे दूर करूं? यह मेरे लिए बहुत ही चुनौती पूर्ण था। इन चुनौतियों को दूर करते हुए आज समुदाय का सहयोग ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला में 100% प्राप्त होता है। क्योंकि अभिभावक मित्रों के सहयोग से विद्यालय का नेतृत्व एवं अन्य गतिविधियों में सहयोग प्रदान करते हैं। जब भी बैठक की बात हो सभी अभिभावक मित्र बढ़ चढ़कर सहयोग प्रदान करते हैं। साथ ही स्वप्रेरित होकर सुबह-शाम घर में स्व अध्ययन के लिए बच्चों को प्रेरित करतें हैं

फार्मूला ● आदिवासी अंचल में चबूतरों पर लग रही कक्षा

मोटरसाइकिल पर गुरुजी लाउड स्पीकर पर पाठ

कोडोली गांव मे बच्चो को पढाने के लिए लगाया गया लाउड स्पीकर। ● नईदुनिया

नारायणपुर के शास. ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के सहायक शिक्षक देवेंद्र कुमार देवांगन बच्चों को पढ़ाने के लिए जाते हुए। ● शासकीय स्कूल कोडोली

अपना देश
खुशबू माटी की

संदीप तिवारी ● रायपुर, नईदुनिया

कोरोना काल में स्कूल बंद होने से बच्चों की पढ़ाई बुरी तरह प्रभावित हुई है। ऑनलाइन पढ़ाई का रास्ता निकाला गया, लेकिन छत्तीसगढ़ के कई गांव ऐसे हैं, जहां इंटरनेट की कनेक्टिविटी नहीं है। ऐसे गांवों के बच्चों का कोर्स कराने के लिए गुरुजी गांव-गांव जा रहे हैं और चबूतरों पर कक्षाएं लग रही हैं। गुरुजी माइक लेकर जा रहे हैं और बच्चों को चबूतरों पर दूर-दूर बिठाकर पढ़ाई करा रहे हैं। जब गुरुजी माइक से बच्चों को कोई कहानी सुनाते हैं तो पूरा गांव उसे सुनता है।

नारायणपुर जिले की शासकीय ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के सहायक शिक्षक देवेंद्र कुमार देवांगन लाउड स्पीकर के सहारे न केवल समझाते हैं, बल्कि होमवर्क भी देते हैं। शिक्षक देवांगन के स्कूल में 70 बचे पढ़ते हैं। वे इस स्कूल में अकेले शिक्षक हैं। इसी तरह महासमुन्द जिले के कोमाखान शासकीय विद्यालय के शिक्षक विजय शर्मा ने कोमाखान व इससे लगे घोयनाबहरा में लाउडस्पीकर से कक्षा का संचालन शुरू किया है। विजय गली मोहल्लों में हर दिन तय समय पर पहुंचते हैं। लाउडस्पीकर से बच्चों का नाम पुकारा जाता है और बच्चे अपने घर के बाहर बने चबूतरा पर बस्ता लेकर बैठ जाते हैं। माइक के माध्यम से यह भी बताया जा रहा है कि बच्चों को पढ़ाए गए पाठ की जांच में समुदाय व पालक किस तरह से मदद कर सकते हैं। इससे पालकों की भी रुचि बढ़ी है।

(इनपुट : महासमुंद से आशुतोष शर्मा, भोंड बस्तर से जितेन्द्र तिवारी)

महासमुंद जिले के कोमाखान शासकीय विद्यालय के शिक्षक विजय शर्मा कोमाखान में स्वीकार हाथ में लेकर बच्चों को पढ़ाते हुए। ● ग्रामीणों द्वारा उपलब्ध

गांव वाले भी बोलने लगे टोमैटो, पोटैटो

बस्तर के एकटागुड़ा के संकुल समन्वयक शैलेंद्र तिवारी भी गांव-गांव जाकर लाउड स्पीकर से पढ़ाई कराने वाले शिक्षकों में शामिल हैं। कलेक्टर रजत बंसल कहते हैं कि पढ़ाई के इस अनोखे तरीके से न केवल बच्चों, बल्कि ग्रामीणों में भी उत्साह है। बच्चों के साथ कई ग्रामीण ध्यान से शिक्षकों द्वारा पढ़ाए जा रहे पाठ को सुनते हैं। संकुल समन्वयक शैलेंद्र तिवारी कहते हैं कि लाउड स्पीकर से पढ़ाने के चलते यहां सब्जी बेचने वाली महिलाएं और अभिभावक आलू, टमाटर और प्याज को पोटैटो, टोमैटो, ओनियन कहने लगे हैं।

Scanned with CamScanner

\

आज ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली संकुल केंद्र के लिए एक मॉडल के रूप में प्रस्तुत है तथा जिला एवं राज्य में ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली की अलग पहचान बन चुका है क्योंकि कोविड-19 के दौरान मेरे द्वारा 4 ग्राम पंचायत में जाकर 13 स्थान पर मोहल्ला क्लास लाउडस्पीकर क्लास संचालित किया गया जिसके कारण आज मुझे मोटरसाइकिल गुरुजी के नाम से भी जानते हैं।

-------------------*********-------------------

परिवर्तन का सिद्धांत- जिसका अर्थ है स्कूल प्रमुख/ नेता के लिए निर्णायक मोड़, क्या काम किया और क्यों इस पर विचार या परिवर्तन का मंत्र

17 अगस्त 2006 को ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में कार्यभार लिया।उस समय गांव में किसी भी प्रकार की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं था । क्योंकि यह क्षेत्र अति संवेदनशील नक्सलाइट क्षेत्र होने के कारण विकास से काफी दूर था । ऐसे में मैं क्या करूं और कैसे करूं यह मेरे लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण विषय था। मैंने परिवर्तन लाने का प्रयास कई बार किया । लेकिन नक्सलियों का दबाव होने की वजह से मैं चाह कर भी कुछ नहीं कर पा रहा था।

क्योंकि गांव में किसी भी प्रकार का कोई बैठक या समूह को एकत्रित करने का अधिकार नहीं था। और गांव में किसी भी प्रकार की कोई भी सामाजिक या सांस्कृतिक भवन नहीं होने के कारण बच्चों को इमली के पेड़ के नीचे लगातार 6 वर्ष तक बहुत ही चुनौतियों का सामना करते हुए बच्चों को अध्ययन करना मेरी मजबूरी बन गया। एकल शिक्षक होने के कारण क्या करूं, क्या ना करूं सोच कर ही मैं शांत बैठ जाता था। धीरे-धीरे मेरे द्वारा प्रयासों को मूर्त रूप देना प्रारंभ किया । चाहे कुछ भी हो जाए अब तो कुछ करके ही दिखाऊंगा इसलिए परिवर्तन की राह में आगे बढ़कर धीरे-धीरे पालकों से संपर्क करता गया।

पालकों को विद्यालय तक लाकर उनके माध्यम से कई प्रकार के आवेदन भवन संबंधी जिला स्तर पर देना प्रारंभ किया। क्योंकि अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण पलकगण जिला में आने से डरते थे। इसी डर के कारण वह मेरा सहयोग नहीं करते थे।

लेकिन मैं उन्हें कई प्रकार से समझाकर सहयोग की अपील करता रहा, आखिरकार परिवर्तन की दिशा में सभी पालकगण का सहयोग धीरे-धीरे मिलना प्रारंभ हुआ और एक छोटा सा किचन शेड का निर्माण ग्राम पंचायत स्तर पर कर दिया गया। इस किचन शेड में एक तरफ भोजन बनाया जाता था । और दूसरे तरफ मुझे अध्ययन कराना पड़ता था यहां तक की इसकी चार दिवारी मात्र 3 फीट ही था ।लेकिन मैं और बच्चे ने मिलकर एक तरफ का दीवाल को लगभग 6 फीट किया गया । जिससे वहां पर ब्लैक बोर्ड का निर्माण किया जा सके, मिट्टी के गारे से जोड़कर एक ब्लैक बोर्ड का निर्माण कर बच्चों को पढ़ने लिखने हेतु प्रेरित करना प्रारंभ किया । लेकिन अति संवेदनशील क्षेत्र होने के कारण यह प्रयास भी मेरा निरर्थक रहा क्योंकि छात्र-छात्राएं की उपस्थिति बहुत कम रहता था। क्योंकि आदिवासी बहुल क्षेत्र होने के कारण यहां पर कृषि कार्य के अतिरिक्त मात्र वनों से प्राप्त वन संपदा को एकत्रित करने के लिए पालकगण अपने बच्चों को अपने साथ ले जाते थे। यदि नहीं ले जाते थे तो घर में रहकर छोटे बच्चों की देखभाल में उन्हें लगा दिया जाता था । तो इससे शिक्षा का स्तर कहां से सुधार हो पाता फिर मैंने और प्रयास करना प्रारंभ किया धीरे-धीरे मेरे प्रयास मूर्त रूप लेने लगा आखिरकार पालकों के प्रयास से कई आवेदन दिया गया । फिर जन भागीदारी विकास समिति सरपंच जी के माध्यम से छोटा सा दो रूम का भवन 2014-15 में बना दिया गया।

यह भवन भी बनने में काफी समय लगा क्योंकि आवागमन का साधन नहीं होने के कारण बरसात की दिनों में यह कार्य रुक गया I जिसकी वजह से भवन बनने में 2 वर्ष का समय लग गया जब दो रूम का भवन बनकर तैयार हुआ तो एक रूम पूर्णतया अंधेरा बना हुआ रहता था और एक ही रूम में कक्षा पहली से पांचवी तक के बच्चों को अध्ययन कराना मेरे लिए किसी चुनौती से कम नहीं था मैंने परिवर्तन लाने के लिए कार्य योजना बनाकर काम करना प्रारंभ किया इस कार्य योजना में सबसे पहले समुदाय को अपने विद्यालय में जोड़ना प्रारंभ किया। जिसके कारण समुदाय का सहयोग मिलना प्रारंभ हुआ सबसे निर्णायक मोड़ मेरे लिए जब गांव की वरिष्ठ महिलाओं को मेहंदी प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया और उन्हीं के हाथों में गांव की युवतियों के द्वारा मेहंदी लगाया गया। जिससे गांव की वरिष्ठ महिला काफी प्रसन्नचित हुए और उनके सहयोग से ही समस्त ग्राम वासियों का सहयोग मिलना प्रारंभ हुआ

घोर नक्सल प्रभावित कोडोली नरिया की ग्रामीण महिलाओं ने पहली बार हाथों में लगाई मेहंदी

सामुदायिक सहभागिता के तहत शिक्षक देवेंद्र देवांगन ने कराया आयोजन

जनधारा समाचार

नारायणपुर। सामुदायिक सहभागिता के अंतर्गत नारायणपुर जिला के सबसे अंदरूनी क्षेत्र करमरी ग्राम पंचायत के आश्रित ग्राम कोडोली नरिया में पहली बार शाला विकास प्रबंधन समिति एवं पालकों के सहयोग से ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में ग्राम के समस्त बुजुर्ग महिला एवं नवयुवतियां सभी ने भाग लिया। मुख्य अतिथि डूंगी बाई 80 वर्ष अध्यक्ष गौरसे बाई और विशेष अतिथि श्रीमती सकारो 70 वर्ष की उपस्थिति में प्रतियोगिता का आयोजन किया गया इस प्रतियोगिता में सते बाई प्रथम रही और द्वितीय में बजाएं स्थान प्राप्त किया। मुख्य अतिथि डूंगी बाई से चर्चा की गई तो बताया कि 80 वर्ष में पहली बार मेरे हाथों में मेहंदी लगी है इसलिए वे काफी खुश थे। आयोजन में ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के प्रधान अध्यापक देवेंद्र देवाँगन अतिथि शिक्षक मनोज यादव अर्जुन चमरु विसरू एवं कजा राम ग्राम पटेल समस्त ग्रामवासी का योगदान रहा। प्रधानाध्यापक देवेंद्र

क्योंकि पालक एवं समुदाय का दृष्टिकोण में बदलाव लाने की आवश्यकता बहुत ज्यादा जरूरी था और यह बदलाव धीरे-धीरे प्रारंभ हो गया यह मेरे लिए हमेशा एक यादगार पल बना रहेगा। विद्यालय को आगे बढ़ाने हेतु कुछ भी संसाधन नहीं था क्योंकि यह जिला मुख्यालय से काफी दूर

होने की वजह से संसाधन की बहुत कमी थी। फिर मेरे द्वारा कुछ नए नवाचार करना प्रारंभ किया। संसाधन के रूप में जब यह नवाचार बच्चों के सामने प्रस्तुत किया गया तो उनके लिए किसी वरदान से कम नहीं था। इसी बीच में मैंने एक छोटे से बालक से प्रेरित होकर एक वानर सेवा का गठन किया। वानर सेवा की गठन के पश्चात विद्यालय में उपस्थिति दर में वृद्धि होना प्रारंभ हुआ ,यह वानर सेना का कार्य था कि जो बच्चे विद्यालय समय से पहले आ जाते थे । वह दूसरे बच्चों को घर में बुलाने चले जाते थे। जिसके कारण विद्यालय के उपस्थिति दर में वृद्धि होना प्रारंभ हुआ, और कई बैठकों में पालकों को बुलाकर उन्हें समझाया जाता था तथा जो पालक विद्यालय नहीं आते थे।

उनके घर में मैं प्रतिदिन अवकाश के पश्चात जाकर संपर्क करता था। जिससे वह सभी पढ़ाई के महत्व को धीरे-धीरे समझने लगे और अपने बच्चों को अन्य कार्य में संलग्न करना बंद कर दिए मैंने पांचवी उत्तीर्ण हुए बच्चों को अन्य विद्यालयों के छात्रावास में प्रवेश करना प्रारंभ किया। जिसके कारण जब बच्चे अवकाश में आते हैं तो ग्राम के अन्य बच्चे उनको देखकर काफी प्रेरित होने लगे जिसके कारण शिक्षा में सुधार होना स्वाभाविक हुआ और धीरे-धीरे शिक्षा एवं गांव का विकास दोनों के स्तर में सुधार होना चालू हो गया और बच्चों को संकुल एवं जिला स्तर में अन्य प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु मैं उन्हें लाना प्रारंभ किया तथा अन्य विद्यालयों में ले जाकर उन्हें पढ़ाई-लिखाई का महत्व क्या है? और पढ़ कर हम किस प्रकार आगे बढ़ सकते हैं ।

इसके बारे में बच्चों को विस्तार से बताया इससे पालक गण काफी प्रसन्न थे और जिला एवं संकुल स्तर खेलकूद प्रतियोगिता में भी पहले और द्वितीय स्थान आना प्रारंभ हुआ। जिसके कारण छात्र-छात्राओं में पढ़ाई के प्रति रुझान प्रारंभ हो गया और धीरे-धीरे विद्यालय का विकास होना प्रारंभ हुआ लेकिन विद्यालय भवन व शौचालय से संबंधित हमेशा खतरा बना हुआ रहता था। जब आंधी तूफान चला था तो विद्यालय की छत हिलना प्रारंभ हो जाता था। और विद्यालय की दीवारों में बहुत बड़े-बड़े दरारें पड़ गए थे।जिसके कारण भवन के अंदर रहकर अध्ययन कार्य के वक्त कई बार-बार मन में डर बना रहता था।

वर्ष में एक दो बार तो ऐसा होता था कि टीन शेड के राड में विषैला सिर्फ झूलते हुए नजर आते थे। बहुत ही ज्यादा असुविधा के बावजूद भी मैंने अपना हिम्मत नहीं हारा और परिवर्तन के लिए सदेव इन चुनौतियों का सामना करता रहा। 2018 में जिला स्तर पुस्तक वाचन प्रतियोगिता में आशीष कुमार वड्डए ने प्रथम स्थान प्राप्त किया जिससे अन्य बच्चों को भी जिला स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करता गया।जिला में जो भी कार्यक्रम होता था तो मैं 3 बच्चों को दिखाने के लिए जरूर लाता था और उन बच्चों को अपने घर में ही रात भर रुका कर दूसरे दिन विद्यालय ले जाता था और उनके माध्यम से पूरे दिन का वर्णन सभी बच्चों के सामने कराता था। जिससे अन्य बच्चे भी पढ़ाई के प्रति सजग होकर अपना अध्ययन करना प्रारंभ करें लेकिन आखिरकार 2019 में कोविड-19 के कारण पूरे भारतवर्ष में पढ़ाई पूरी तरह से बंद था ऐसे समय में मैंने हिम्मत नहीं हारा और 14 मार्च 2019 से ही जब स्कूल बंद था। तो मैं प्रत्येक गांव में जाकर जन चौपाल लगाकर समस्त ग्राम वासियों को कोरोना से डरना नहीं है बल्कि हमें क्या करना है? क्या नहीं।इसके बारे में उनका विस्तार से बताता गया जहां पर संपूर्ण भारतवर्ष में विद्यालय बंद था।

प्रादेशिकी
रायपुर शनिवार, 3 अक्टूबर 2020
जगदलपुर-कांकेर-नारायणपुर-बीजापुर-दंतेवाड़ा

आत्मनिर्भर बनने के लिए अच्छी पढ़ाई जरूरी : रजनू नेताम

नारायणपुर, 2 अक्टूबर (देशबन्धु)। पहली से आठवीं तक की अच्छी पढ़ाई हमारी आगे की जिंदगी की मजबूत नींव तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारे आत्मनिर्भर बनने के लिए आप बच्चों में से ही कोई अच्छा अफसर, पुलिस, शिक्षक, डॉक्टर, कृषक इत्यादि बनने तय हैं। यह विचार प्रदेश कांग्रेस महामंत्री रजनू नेताम ने नारायणपुर के बोरण्ड गांव में चल रहे लाउडस्पीकर, ऑफलाइन कक्षा में बच्चों को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने आगे कहा कि हमें अभी मिल रहे विभिन्न सुविधाओं, अपने शिक्षकों के मिल रहे ज्ञान का भरपूर सदुपयोग करना है। निडर होकर आप सभी अपने प्रश्नों को पूछा करेंगे। हम सभी की सबसे प्रिय सहयोगी, दोस्त, गुरू, संरक्षक हमारी मां होती हैं। हमें अच्छे इंसान बनने हैं। हमारे जिले की इतनी विपरीत परिस्थितियों के बावजूद इन नवनिहाल बच्चों के भविष्य को संवारने में लगे सभी शिक्षकों, पालकों की यह मेहनत निश्चित ही हमारे राज्य व देश की ख्याति बढ़ाएगी।

इधर-उधर भटकते बच्चों को मिल रहा शिक्षा का सहारा : भगवंती पिस्दा, जनपद सदस्य बोरण्ड

स्थानीय बोरण्ड क्षेत्र की जनपद पंचायत सदस्या श्रीमती भगवंती पिस्दा ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारे इस मोहल्ला कक्षा में आसपास के विभिन्न स्कूलों के बच्चों को निरंतर जून महीने से विविध प्रकार की बातें सीखने को मिल रही हैं। पहले ये बच्चे विद्यालय बन्द हो जाने के कारण इधर उधर यूँ ही बिना कोई उद्देश्य के भटकते रहते थे।

ग्रामीण पालकों के सुदृढ़ प्रबंधन से हो रहे हैं सृजनात्मक कार्य : देवेंद्र कुमार देवांगन

इस बोरण्ड मोहल्ला कक्षा के संयोजक नरिया कोडोली के शिक्षक देवेंद्र कुमार देवांगन ने जानकारी दी कि पूरे विश्व में व्याप्त कोविड-19 के कारण बंद चल रहे विद्यालयों के विद्यार्थियों को पढ़ाई से जोड़े रखने के लिए यहां के समस्त पालकों की यह पहल प्रशंसनीय है। उनके ही सर्वसम्मति, प्रबंधन तथा सुरक्षा की जिम्मेदारी लेने से यह कक्षा निर्बाध रूप से संचालित हो रहा है। यहां आसपास के प्राथमिक, माध्यमिक, विद्यालय, कस्तूरबा विद्यालय इत्यादि में पढ़ने वाले लगभग 50-60 बच्चे सतत रूप से शामिल हो रहे हैं। सम्पूर्ण बच्चों को मास्क सुरक्षा, फिजिकल डिस्टेंस व हैंड सेनेटाइजर का समुचित उपयोग करते हुए बच्चों को उनके कक्षागत विषय अध्ययन के साथ विभिन्न सृजनात्मक कार्य भी कराए जा रहे हैं।

शिक्षा सारथी 9वीं कक्षा उत्तीर्ण चैतराम नायक सहित तुलसा रावटे, नरेंद्र इत्यादि का कक्षा संचालन व प्रबंधन में महत्वपूर्ण योगदान मिल रहा है

पंचायत बोरंड के मोहल्ला कक्षा में पहुंचे जनप्रतिनिधि

अतिथियों ने बच्चों को पूछे सामान्य ज्ञान के सवाल

रजनू नेताम के द्वारा बच्चों को सामान्य ज्ञान के प्रश्नों के तहत स्थानीय जिला कलेक्टर, एस. पी., मुख्यमंत्री, राज्यपाल, प्रथम मुख्यमंत्री आदि के संबंध में पूछा गया, जिसमें सभी बच्चे बहुत ही बिना डरे हुए प्रश्नों का उत्तर सटीक तरीके से दिए, जिससे आए हुए अतिथि एवं जनप्रतिनिधि गण काफी प्रसन्न हुए। उन्होंने उपस्थित सभी बच्चों को अपनी परीक्षाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने की प्रेरणा दी। साथ ही बालकों की तुलना में बालिकाओं के उपलब्धि पर खुशी व्यक्त की तथा बालकों से भी बेहतर कार्य करने हेतु संकल्प लेने की बात कही।

आठवीं की बालिका भुनेश्वरी ने गोंडी भाषा में महात्मा गांधी के जीवन परिचय को पढ़कर सुनाया

इसके पश्चात कक्षा आठवीं की छात्रा कुमारी भुनेश्वरी द्वारा गोंडी में महात्मा गांधी की जीवन यात्रा को बताया गया। अतिथि नेताम काफी प्रसन्न हुए क्योंकि यहां की स्थानीय भाषा गोंडी है और गोंडी में ही बच्चों को राष्टपिता के जीवन की परिचय को बताया गया। उन्होंने बच्चों को अपने स्थानीय भाषा का प्रयोग पढ़ाई में करने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद दिए।

बच्चों में छिपी आंतरिक प्रतिभा को मिल रहा सृजनात्मक अवसर

इस मोहल्ला कक्षा में लीसा की बनाए फूलदान सहित अन्य बच्चों भुनेश्वरी, रेवती, अलिसा, टिकेश्वरी, हेमलता, थनेश्वरी, ललिता, लिकेश्वरी, जामवंतीन, प्रतिमा, ईश्वरी, लोकेश्वरी, भोजबती, मायावती, तीनेश्वरी, मनीषा, हरिना आदि के द्वारा बनाए कागज, चूड़ी, रस्सी, अखबार, छिन पत्ता, देशी अनाज से राखी आदि के कलाकृतियों को देखकर अतिथिगण मंत्रमुग्ध हो गए।

उन्होंने इन्हें बच्चों के लिए आगामी प्रतियोगी परीक्षाओं पीईटी, नीट, जेईई इत्यादि में सम्मिलित होने के लिए मानसिक योग्यता के रूप में बेहतर आधारशिला बनाने का आह्वान किया।

ऐसे समय में मैंने अपने स्कूल में अध्ययन को सुचारू रूप से संचालित रखा तथा साथ ही अन्य ग्राम पंचायत के 13 स्थान में गांव के युवक युवतियों के सहयोग से मोहल्ला क्लास लाउडस्पीकर क्लास प्रारंभ रखा इन कक्षाओं के माध्यम से लगभग 300 छात्र छात्राओं को सुचारू रूप से अध्ययन में जोड़े रखा जिसके कारण मुझे आज मोटरसाइकिल गुरुजी के नाम से पूरे राज्य में तथा अन्य राज्य में भी जानते हैं। इस कार्य से नीति आयोग और माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी जी ने भी मन की बात में मेरा तारीफ किए। दूसरा निर्णायक मोड़ 18 नवंबर 2021 से प्रारंभ हो गया जब मैं अभिभावक मित्र का गठन किया इस गठन में पूरे ग्राम की महिला पुरुष युवक युवतियों तथा अन्य ग्राम के पढ़े-लिखे वरिष्ठ नागरिक एवं सरकारी कर्मचारियों को जोड़ना प्रारंभ किया।इस अभिभावक मित्र के द्वारा 1 वर्षीय कार्य योजना बनाकर उसमें सतत् प्रयास करना प्रारंभ कर दिये। अति संवेदनशील और नक्सलाइट क्षेत्र होने के कारण भवन बना यह भी एक बड़ी चुनौती था। क्योंकि इस क्षेत्र में पक्का भवन बनने नहीं दिया जा रहा था। जिसके कारण मुझे अभिभावक मित्रों

का बैठक रखकर उनके सामने स्पष्ट रूप से बोल दिया गया था। यदि भवन इस गांव में नहीं बनेगा तो मैं अपना स्थानांतरण किसी अन्य विद्यालय में करा लूंगा, यह सुनकर सभी अभिभावक मित्र काफी चिंतित थे। वे नहीं चाहते थे। कि मैं यह विद्यालय छोड़कर किसी अन्य स्कूलों में जाऊं, इसलिए उनके द्वारा कई बार नक्सलियों से संपर्क कर उनसे अनुमति लिए भवन बनाना प्रारंभ किया गया।और मैं शिक्षा के क्षेत्र में नित्य नए-नए नवाचार करना प्रारंभ किया। जिसके फलस्वरुप विद्यालय का विकास होने लगा और बच्चों का शैक्षणिक स्तर में सुधार हुआ

दैनिक भास्कर **बस्तर भास्कर** 27-09-2023

शिक्षकों के क्षमता निर्माण प्रशिक्षण का आयोजन किया

नारायणपुर। ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में पहुंचे अफसर।

नारायणपुर| अर्पण संस्था द्वारा जिला स्तर पर एक अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें छत्तीसगढ़ में बाल लैंगिक शोषण के खिलाफ विद्यालयों में व्यक्तिगत सुरक्षा कार्यक्रम शुरू करने शिक्षकों की क्षमता निर्माणि प्रशिक्षण चलाया जा रहा है। इसी के तहत 21 सितंबर को प्रशिक्षण आयोजित किया गया, जिसमें ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली के शिक्षक देवेंद्र कुमार देवांगन ने भी भाग लिया।

इस प्रशिक्षण के अंत में शिक्षक देवेंद्र कुमार देवांगन के द्वारा प्रस्तुतिकरण दिया गया। जिससे खुश होकर प्रशिक्षिका जेफीना थॉमस के द्वारा शिक्षक की तारीफ की गई। उसके बाद थॉमस ने तुरंत ही निश्चय कर अपने उच्च अधिकारी को ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में भेजने का निर्णयि लिया और शनिवार को सुबह 10:30 बजे ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली में सुशांत शिंदे पहुंच गए। शिक्षक द्वारा बाल लैंगिक शोषण क्या है तथा उसके लिए रोकथाम, बाल लैंगिक शोषण के अल्पकालीन एवं दीर्घकालीन प्रभाव, व्यक्तिगत सुरक्षा शिक्षा के बारे में बच्चों को चित्र दिखाकर बताया गया। अर्पण संस्था के शिंदे द्वारा भी बाल लैंगिक शोषण से संबंधित बच्चों को जानकारी दी गई।

अर्पण संस्था के छत्तीसगढ़ मैनेजर श्री प्रकाश शिंदे ने भी मेरे स्कूल का भ्रमण किया और बाल उत्पीड़न संबंधित बच्चों को जानकारी अवगत कराये। उनका भी कहना था।कि इतने दुरुस्त आंचल में आपके द्वारा किया गया कार्य बहुत ही सराहनीय है। पहली बार मुंबई से आए हुए निजी संस्था के द्वारा तारीफ किया गया यह मेरे लिए बहुत ही सौभाग्य की बात था। साथ मेरे द्वारा गठित विवेकानंद महिला समिति स्व सहायता समूह एवं विवेकानंद नृतक दल का भी विकास होने लगा और उन्हें अन्य जिलों में नृत्य करने हेतु बुलाया जाने लगा आखिरकार मेरा सपना नए भवन का 4 अक्टूबर 2023 को जिला पंचायत अध्यक्ष महोदय श्यामवती रजनू नेताम के द्वारा उद्घाटन किया गया। इस उद्घाटन में ग्राम पंचायत के समस्त ग्रामवासियों को पीला चावल देकर निमंत्रण दिया गया था। जिसमें सभी ग्राम के ग्रामवासी उद्घाटन समारोह में सम्मिलित हुए यह मेरे लिए बहुत ही

यादगार पल रहा ।आदिवासी अपनी परंपरा को छोड़कर आधुनिक संसाधनों का उपयोग करने लगे। लेकिन मैं उन्हें अपने रीति रिवाज एवं प्राचीन परंपरा से जोड़ने का प्रयास सतत प्रारंभ है ।

इसी परंपरा को आगे बढ़ाते हुए मैंने जो प्राचीन समय में के पेय पदार्थ एवं पानी को अपने कार्य में ले जाने के लिए जिस तुमडी़ का उपयोग करते थे । उसमें नवाचार को सम्मिलित कर एक नया उदाहरण प्रस्तुत मेरे द्वारा किया गया, और आज ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली अपने राज्य में अलग स्थान बना चुका है। इतने वर्षों के अर्थक प्रयास से आज मैं और मेरे विद्यालय का शैक्षणिक स्तर में काफी सुधार हो रहा है। संकुल के अन्य विद्यालयों एवं जिला के विद्यालयों से आगे निकल चुका है। कहते हैं, कि जो चुनौतियों का सामना करता है। वही आगे बढ़ता है इसी मूल मंत्र का उपयोग करते हुए आज असफलताओं के बीच मुझे सफलता प्राप्त हो रहा है।।

दैनिक भास्कर
बस्तर भास्कर 14-10-2023

राज्यपाल पुरस्कार की राशि से स्कूल में करवाई वॉल पेंटिंग

शिक्षक ने राज्यपाल पुरस्कार की राशि से विद्यालय में वाल पेंटिंग करवाया है।

भास्कर न्यूज़ | नारायणपुर

जिले के प्राथमिक शाला कोडोली में पदस्थ शिक्षक देवेंद्र देवांगन ने राज्यपाल पुरस्कार में मिली राशि से विद्यालय में वॉल पेंटिंग करवाकर प्रिंट रिच का माहौल तैयार किया और अन्य शिक्षकों के लिए मिसाल बन गए। विद्यालय में अध्यनरत बच्चों के अभिभावकों सहित जिलेवासी भी शिक्षक के इस कदम की खूब सराहना कर रहे हैं। प्राथमिक शाला कोडोली में वर्ष 2006 से कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात शिक्षक देवेन्द्र कुमार देवांगन लगातार 6 वर्षों तक इमली पेड़ के नीचे अभावों के बीच अध्यापन करवाते रहे। जिसके बाद वर्ष 2014 -15 में जनभागीदारी विकास समिति और ग्राम पंचायत के द्वारा छोटा सा विद्यालय बना दिया गया।

कोविड-19 के दौरान अपने कार्यों से मोटरसायकिल गुरुजी के रूप में प्रसिद्ध और अपने नवाचारी गतिविधियों के कारण, शिक्षा के क्षेत्र में अपने उल्लेखनीय योगदान के लिए

ग्रामीणों का सेल्फी जोन बना स्कूल

विद्यालय में वॉल पेंटिंग होने के बाद आसपास के ग्रामीणों के लिए यह विद्यालय किसी सेल्फी जोन से कम नजर नहीं आ रहा है। ग्रामीण क्षेत्र के युवा और महिलाएं अपने बच्चों के साथ विद्यालय की पेंटिंग के साथ सेल्फी लेती नजर आ रही हैं।

शिक्षक देवेंद्र देवांगन को 5 सितंबर को राज्यपाल पुरस्कार प्राप्त हुआ। राज्यपाल पुरस्कार की राशि से शिक्षक ने अपने विद्यालय के नए भवन में प्रिंट रिच वातावरण बनाने के लिए पूरी राशि दान कर दी, साथ ही बच्चों की पढ़ाई के लिए आधुनिक सामान भी उपलब्ध करवा रहे हैं। शिक्षक का सपना था कि ज्ञान ज्योति प्राथमिक शाला कोडोली जिले के अन्य विद्यालयों की बराबरी पर हो और आज यह विद्यालय निजी स्कूलों को टक्कर देने के लिए तैयार है।

कोरोना कल के दौरान किए हुए कार्य और नवाचार का उल्लेख छत्तीसगढ़ शासन के पत्र पत्रिकाएं, शिक्षा के गोठ, मासिक पत्रिका, कोरोना कल फिर भी पढ़ाई जारी ,और जांजगीर-चांपा डाइट से प्रकाशित शिक्षा सारांश में भी मेरे नवाचारों को स्थान मिला है।

---------------*****--------------